الجزء ٧

وَاِذَا سَمِعُوْا مَآ اُنْزِلَ اِلَى الرَّسُوْلِ تَرٰٓى اَعْيُنَهُمْ

उन की आँखें	तू देखे	रसूल	तरफ़	जो नाज़िल किया गया	सुनते हैं	और जब

تَفِيْضُ مِنَ الدَّمْعِ مِمَّا عَرَفُوْا مِنَ الْحَقِّ ۚ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اٰمَنَّا

हम ईमान लाए	ऐ हमारे रब	वह कहते हैं	हक़	से-को	उन्हों ने पहचान लिया	इस (वजह से)	आँसू	से	वह पड़ती हैं

فَاكْتُبْنَا مَعَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿٨٣﴾ وَمَا لَنَا لَا نُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَمَا جَآءَنَا

हमारे पास आया	और जो	अल्लाह पर	हम ईमान न लाएं	हम को	और क्या	83	गवाह (जमा)	साथ	पस हमें लिख ले

مِنَ الْحَقِّ ۙ وَنَطْمَعُ اَنْ يُّدْخِلَنَا رَبُّنَا مَعَ الْقَوْمِ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٨٤﴾

84	नेक लोग	क़ौम	साथ	हमारा रब	हमें दाख़िल करे	कि	और हम तमअ़ रखते हैं	हक़	से-पर

فَاَثَابَهُمُ اللّٰهُ بِمَا قَالُوْا جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ

हमेशा रहेंगें	नहरें	उस के नीचे	से	बहती हैं	बाग़ात	उस के बदले जो उन्हों ने कहा	अल्लाह	पस दिए उन को

فِيْهَا ۭ وَذٰلِكَ جَزَآءُ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٨٥﴾ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا

और झुटलाया	उन्हों ने कुफ़्र किया	और जो लोग	85	नेकोकार (जमा)	जज़ा	और यह	उस (उन) में

ع ١١ ٩ ١

بِاٰيٰتِنَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ﴿٨٦﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

ईमान लाए	वह लोग जो	ऐ	86	दोज़ख़	साथी (वाले)	यही लोग	हमारी आयात

لَا تُحَرِّمُوْا طَيِّبٰتِ مَآ اَحَلَّ اللّٰهُ لَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوْا ۭ اِنَّ اللّٰهَ

बेशक अल्लाह	और हद से न बढ़ो	तुम्हारे लिए	हलाल कीं अल्लाह ने	जो	पाकीज़ा चीज़ें	न हराम ठहराओ

لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ﴿٨٧﴾ وَكُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ حَلٰلًا طَيِّبًا ۠

पाकीज़ा	हलाल	तुम्हें दिया अल्लाह ने	उस से जो	और खाओ	87	हद से बढ़ने वाले	नहीं पसन्द करता

وَّاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْٓ اَنْتُمْ بِهٖ مُؤْمِنُوْنَ ﴿٨٨﴾ لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللّٰهُ

तुम्हारा मुआख़ज़ा करता अल्लाह	नहीं	88	मानते हो	उस को	तुम	वह जिस	और डरो अल्लाह से

بِاللَّغْوِ فِيْٓ اَيْمَانِكُمْ وَلٰكِنْ يُّؤَاخِذُكُمْ بِمَا عَقَّدْتُّمُ الْاَيْمَانَ ۚ

क़सम	मज़बूत बांधा	उस पर जो	मुआख़ज़ा करता है तुम्हारा	और लेकिन	तुम्हारी क़समें	में-पर	बेहूदा

فَكَفَّارَتُهٗٓ اِطْعَامُ عَشَرَةِ مَسٰكِيْنَ مِنْ اَوْسَطِ مَا تُطْعِمُوْنَ

तुम खिलाते हो	जो	औसत	से-का	मोहताज (जमा)	दस	खाना खिलाना	सो उस का कफ़्फ़ारा

اَهْلِيْكُمْ اَوْ كِسْوَتُهُمْ اَوْ تَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ ۭ فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ

तो रोज़ा रखे	न पाए	पस जो	एक गर्दन	या आज़ाद करना	या उन्हें कपड़े पहनाना	अपने घर वाले

ثَلٰثَةِ اَيَّامٍ ۭ ذٰلِكَ كَفَّارَةُ اَيْمَانِكُمْ اِذَا حَلَفْتُمْ ۭ وَاحْفَظُوْٓا

और हिफ़ाज़त करो	तुम क़सम खाओ	जब	तुम्हारी क़समें	कफ़्फ़ारा	यह	तीन दिन

اَيْمَانَكُمْ ۭ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٨٩﴾

89	शुक्र करो	ताकि तुम	अपने अहकाम	तुम्हारे लिए	बयान करता है अल्लाह	इसी तरह	अपनी क़समें

और जब वह सुनते हैं जो रसूल (स) की तरफ़ नाज़िल किया गया, तू देखे कि उन की आँखें आँसूओं से बह पड़ती हैं (उबल पड़ती हैं) इस वजह से कि उन्हों ने हक़ को पहचान लिया, वह कहते हैं कि ऐ हमारे रब! हम ईमान लाए, पस हमें गवाहों (ईमान लाने वालों) के साथ लिख ले। (83)

और हम को क्या हुआ कि हम ईमान न लाएं अल्लाह पर और उस हक़ पर जो हमारे पास आया, और हम तमअ़ रखते हैं कि हमें दाख़िल करे हमारा रब नेक लोगों के साथ। (84)

पस जो उन्हों ने कहा उस के बदले अल्लाह ने उन्हें बाग़ात दिए जिन के नीचे नहरें बहती हैं, वह उन में हमेशा रहेंगें, और यह नेकोकारों की जज़ा है। (85)

और जिन लोगों ने कुफ़्र किया और हमारी आयात को झुटलाया, यही लोग दोज़ख़ वाले हैं। (86)

ऐ वह लोगो जो ईमान लाए: पाकीज़ा चीज़ें जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए हलाल कीं वह हराम न ठहराओ, और हद से न बढ़ो, बेशक अल्लाह नहीं पसन्द करता हद से बढ़ने वालों को। (87)

और जो अल्लाह ने तुम्हें दिया है उस में से हलाल और पाकीज़ा खाओ और अल्लाह से डरो वह जिस को तुम मानते हो। (88)

अल्लाह तुम्हारा मुआख़ज़ा नहीं करता (नहीं पकड़ता) तुम्हारी बेहूदा क़समों पर लेकिन तुम्हारा मुआख़ज़ा करता है (पकड़ता है) जिस क़सम को तुम ने मज़बूत बान्धा (पुख़्ता क़सम पर), सो उस का कफ़्फ़ारा दस मोहताजों को खाना खिलाना है औसत (दरजे) का जो तुम अपने घर वालों को खिलाते हो या उन्हें कपड़े पहनाना या एक गर्दन (ग़ुलाम) आज़ाद करना, पस जो यह न पाए वह तीन दिन के रोज़े रखे, यह तुम्हारी क़समों का कफ़्फ़ारा है जब तुम क़सम खाओ, और अपनी क़समों की हिफ़ाज़त करो, इसी तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अपने अहकाम बयान करता है ताकि तुम शुक्र करो। (89)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّمَا الْخَمْرُ وَالْمَيْسِرُ وَالْاَنْصَابُ وَالْاَزْلَامُ

और पांसे	और बुत	और जुआ	इस के सिवा नहीं कि शराब	ईमान वालो	ऐ

رِجْسٌ مِّنْ عَمَلِ الشَّيْطٰنِ فَاجْتَنِبُوْهُ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿٩٠﴾ اِنَّمَا

इस के सिवा नहीं	90	फ़लाह पाओ	ताकि तुम	सो उन से बचो	शैतान	काम	से	नापाक

يُرِيْدُ الشَّيْطٰنُ اَنْ يُّوْقِعَ بَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَآءَ فِى الْخَمْرِ

शराब	में-से	और बैर	दुश्मनी	तुम्हारे दरमियान	कि डाले	शैतान	चाहता है

وَالْمَيْسِرِ وَيَصُدَّكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَعَنِ الصَّلٰوةِ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ مُّنْتَهُوْنَ ﴿٩١﴾

91	बाज़ आओगे	तुम	पस क्या	और नमाज़ से	अल्लाह की याद	से	और तुम्हें रोके	और जुआ

وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَاحْذَرُوْا ۚ فَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَا

सिर्फ़	तो जान लो	तुम फिर जाओगे	फिर अगर	और बचते रहो	रसूल	और इताअ़त करो	अल्लाह	और इताअ़त करो

عَلٰى رَسُوْلِنَا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿٩٢﴾ لَيْسَ عَلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ

और उन्हों ने अ़मल किए नेक	जो लोग ईमान लाए	पर	नहीं	92	खोल कर	पहुँचा देना	हमारा रसूल (स)	पर (ज़िम्मा)

جُنَاحٌ فِيْمَا طَعِمُوْٓا اِذَا مَا اتَّقَوْا وَّاٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ

और उन्हों ने अ़मल किए नेक	और वह ईमान लाए	उन्हों ने परहेज़ किया	जब	वह खा चुके	में-जो	कोई गुनाह

ثُمَّ اتَّقَوْا وَّاٰمَنُوْا ثُمَّ اتَّقَوْا وَّاَحْسَنُوْا ۗ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٩٣﴾ ع ١٢ ٤ ٢

93	नेकोकार (जमा)	दोस्त रखता है	और अल्लाह	और उन्हों ने नेकोकारी की	वह डरे	फिर	और ईमान लाए	फिर वह डरे

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَيَبْلُوَنَّكُمُ اللّٰهُ بِشَىْءٍ مِّنَ الصَّيْدِ تَنَالُهٗٓ اَيْدِيْكُمْ

तुम्हारे हाथ	उस तक पहुँचते हैं	शिकार	से	कुछ (किसी क़द्र)	ज़रूर तुम्हें आज़माएगा अल्लाह	ईमान वालो	ऐ

وَرِمَاحُكُمْ لِيَعْلَمَ اللّٰهُ مَنْ يَّخَافُهٗ بِالْغَيْبِ ۚ فَمَنِ اعْتَدٰى بَعْدَ ذٰلِكَ

इस के बाद	ज़ियादती की	सो जो-जिस	बिन देखे	उस से डरता है	कौन	ताकि अल्लाह मालूम करले	और तुम्हारे नेज़े

فَلَهٗ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٩٤﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَقْتُلُوا الصَّيْدَ وَاَنْتُمْ

और जब कि तुम	शिकार	न मारो	ईमान वालो	ऐ	94	दर्दनाक	अ़ज़ाब	सो उसके लिए

حُرُمٌ ۗ وَمَنْ قَتَلَهٗ مِنْكُمْ مُّتَعَمِّدًا فَجَزَآءٌ مِّثْلُ مَا قَتَلَ مِنَ النَّعَمِ

मवेशी से	जो वह मारे	बराबर	तो बदला	जान बूझ कर	तुम में से	उस को मारे	और जो	हालते एहराम में

يَحْكُمُ بِهٖ ذَوَا عَدْلٍ مِّنْكُمْ هَدْيًا ۢ بٰلِغَ الْكَعْبَةِ اَوْ كَفَّارَةٌ طَعَامُ

खाना	या कफ़्फ़ारा	कअ़बा	पहुँचाए	नियाज़	तुम से	दो मोतबर	उस का	फ़ैसला करें

مَسٰكِيْنَ اَوْ عَدْلُ ذٰلِكَ صِيَامًا لِّيَذُوْقَ وَبَالَ اَمْرِهٖ ۗ عَفَا اللّٰهُ عَمَّا سَلَفَ ۗ

पहले हो चुका	उस से जो	अल्लाह ने माफ़ किया	अपने काम (किए) की सज़ा	ताकि चखे	रोज़े	उस	या बराबर	मोहताज (जमा)

وَمَنْ عَادَ فَيَنْتَقِمُ اللّٰهُ مِنْهُ ۗ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ ذُو انْتِقَامٍ ﴿٩٥﴾

95	बदला लेने वाला	ग़ालिब	और अल्लाह	उस से	तो अल्लाह बदला लेगा	फिर करे	और जो

ऐ ईमान वालो! इस के सिवा नहीं कि शराब, जुआ और बुत और पांसे (फ़ाल के तीर) नापाक हैं, शैतानी काम हैं, सो उन से बचो ताकि तुम फ़लाह (कामयाबी और नजात) पाओ। (90)

इस के सिवा नहीं कि शैतान चाहता है कि तुम्हारे दरमियान शराब और जुए से दुश्मनी डाले और तुम्हें रोके अल्लाह की याद से और नमाज़ से, पस क्या तुम बाज़ आओगे? (91)

और तुम इताअ़त करो अल्लाह की और रसूल (स) की, और बचते रहो, फिर अगर तुम फिर जाओगे तो जान लो कि हमारे रसूल (स) के ज़िम्मे सिर्फ़ खोल कर (वाज़ेह तौर पर) पहुँचा देना है। (92)

जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने नेक अ़मल किए उन पर उस में कोई गुनाह नहीं जो वह खा चुके जबकि (आइन्दाह) उन्हों ने परहेज़ किया और ईमान लाए और नेक अ़मल किए, फिर वह डरे और ईमान लाए, फिर वह डरे और उन्हों ने नेकोकारी की, और अल्लाह नेकोकारों को दोस्त रखता है। (93)

ऐ ईमान वालो! अल्लाह तुम्हें ज़रूर आज़माएगा किसी क़द्र (उस) शिकार से जिस तक तुम्हारे हाथ और तुम्हारे नेज़े पहुँचते हैं ताकि अल्लाह मालूम कर ले कौन उस से बिन देखे डरता है, सो इस के बाद जिस ने ज़ियादती की उस के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है। (94)

ऐ ईमान वालो! न मारो शिकार जब कि तुम हालते एहराम में हो, और तुम में से जो उस को जान बूझ कर मारे तो जो वह मारे उस के बराबर बदला है मवेशियों में से, जिस का तुम में से दो मोतबर फ़ैसला करें, ख़ाने कअ़बा नियाज़ पहुँचाए या (इस का) कफ़्फ़ारा है खाना चन्द मोहताजों का, या उस के बराबर रोज़े रखना ताकि वह अपने किए की सज़ा चखे, अल्लाह ने माफ़ किया जो पहले हो चुका और जो फिर करे तो अल्लाह उस से बदला लेगा, और अल्लाह ग़ालिब बदला लेने वाला है। (95)

أُحِلَّ لَكُمْ صَيْدُ الْبَحْرِ وَطَعَامُهٗ مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِلسَّيَّارَةِ ۚ وَحُرِّمَ

और हराम किया गया	और मूसाफ़िरों के लिए	तुम्हारे लिए	फ़ाइदा	और उस का खाना	दर्या का शिकार	तुम्हारे लिए	हलाल किया गया

عَلَيْكُمْ صَيْدُ الْبَرِّ مَا دُمْتُمْ حُرُمًا ۗ وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْٓ اِلَيْهِ

उस की तरफ़	वह जो	अल्लाह	और डरो	हालते एहराम में	जब तक तुम हो	ख़ुश्की का शिकार	तुम पर

تُحْشَرُوْنَ ﴿٩٦﴾ جَعَلَ اللّٰهُ الْكَعْبَةَ الْبَيْتَ الْحَرَامَ قِيٰمًا لِّلنَّاسِ

लोगों के लिए	क़ियाम का बाइस	एहतिराम वाला घर	कअ़बा	अल्लाह	बनाया	96	तुम जमा किए जाओगे

وَالشَّهْرَ الْحَرَامَ وَالْهَدْيَ وَالْقَلَآئِدَ ۗ ذٰلِكَ لِتَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ

कि अल्लाह	ताकि तुम जान लो	यह	और पट्टे पड़े हुए जानवर	और क़ुर्बानी	और हुर्मत वाले महीने

يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَاَنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ

चीज़	हर	और यह कि अल्लाह	ज़मीन में	और जो	आस्मानों में	जो	उसे मालूम है

عَلِيْمٌ ﴿٩٧﴾ اِعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ وَاَنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ

बख़्शने वाला	और यह कि अल्लाह	अ़ज़ाब	सख़्त	अल्लाह	कि	जान लो	97	जानने वाला

رَّحِيْمٌ ﴿٩٨﴾ مَا عَلَى الرَّسُوْلِ اِلَّا الْبَلٰغُ ۗ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تُبْدُوْنَ

जो तुम ज़ाहिर करते हो	जानता है	और अल्लाह	मगर पहुँचा देना	रसूल (स) पर- रसूल के ज़िम्मे	नहीं	98	मेहरबान

وَمَا تَكْتُمُوْنَ ﴿٩٩﴾ قُلْ لَّا يَسْتَوِي الْخَبِيْثُ وَالطَّيِّبُ وَلَوْ

ख़ाह	और पाक	नापाक	बराबर नहीं	कह दीजिए	99	तुम छुपाते हो	और जो

اَعْجَبَكَ كَثْرَةُ الْخَبِيْثِ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ يٰٓاُولِي الْاَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ

ताकि तुम	ऐ अ़क़्ल वालो	सो डरो अल्लाह से	नापाक	कस्रत	तुम्हें अच्छी लगे

ع ١٣ ٧ ٣ تُفْلِحُوْنَ ﴿١٠٠﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَسْـَٔلُوْا عَنْ اَشْيَآءَ اِنْ تُبْدَ

जो ज़ाहिर की जाएं	चीज़ें	से- मुतअ़ल्लिक़	न पूछो	ईमान वाले	ऐ	100	फ़लाह पाओ

لَكُمْ تَسُؤْكُمْ ۚ وَاِنْ تَسْـَٔلُوْا عَنْهَا حِيْنَ يُنَزَّلُ الْقُرْاٰنُ تُبْدَ لَكُمْ ۗ

ज़ाहिर कर दी जाएंगी तुम्हारे लिए	नाज़िल किया जा रहा है क़ुरआन	जब	उनके मुतअ़ल्लिक़	तुम पूछोगे	और अगर	तुम्हें बुरी लगें	तुम्हारे लिए

عَفَا اللّٰهُ عَنْهَا ۗ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ﴿١٠١﴾ قَدْ سَاَلَهَا قَوْمٌ

एक क़ौम	उस के मुतअ़ल्लिक़ पूछा	101	बुर्दबार	बख़्शने वाला	और अल्लाह	उस से	अल्लाह ने दरगुज़र की

مِّنْ قَبْلِكُمْ ثُمَّ اَصْبَحُوْا بِهَا كٰفِرِيْنَ ﴿١٠٢﴾ مَا جَعَلَ اللّٰهُ مِنْۢ بَحِيْرَةٍ

बहीरा	अल्लाह	नहीं बनाया	102	इन्कार करने वाले (मुन्किर)	उस से	वह हो गए	फिर	तुम से क़ब्ल

وَّلَا سَآئِبَةٍ وَّلَا وَصِيْلَةٍ وَّلَا حَامٍ ۙ وَّلٰكِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

जिन लोगों ने कुफ़्र किया	और लेकिन	और न हाम	और न वसीला	और न साइबा

يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ ۗ وَاَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿١٠٣﴾

103	नहीं रखते अ़क़्ल	और उन के अक्सर	झूटे	अल्लाह पर	वह बुहतान बान्धते हैं

तुम्हारे लिए हलाल किया गया दर्या का शिकार और उस का खाना तुम्हारे फ़ाइदे के लिए है और मूसाफ़िरों के लिए, और तुम पर ख़ुश्की (जंगल) का शिकार हराम किया गया जब तक तुम हालते एहराम में हो, और अल्लाह से डरो जिस की तरफ़ तुम जमा किए जाओगे। (96)

अल्लाह ने बनाया कअ़बा एहतिराम वाला घर, लोगों के लिए क़ियाम का बाइस, और हुर्मत वाले महीने और क़ुर्बानी और गले में पट्टा (क़ुर्बानी की अ़लामत) पड़े हुए जानवर। यह इस लिए है ताकि तुम जान लो कि अल्लाह को मालूम है जो कुछ आस्मानों में और जो ज़मीन में है, और यह कि अल्लाह हर चीज़ को जानने वाला है। (97)

जान लो कि अल्लाह सख़्त अ़ज़ाब देने वाला है और यह कि अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है। (98)

रसूल (स) के जिम्मे सिर्फ़ (पैग़ाम) पहुँचा देना है, और अल्लाह जानता है जो तुम ज़ाहिर करते हो और जो तुम छुपाते हो। (99)

कह दीजिए! बराबर नहीं नापाक और पाक, ख़ाह तुम्हें नापाक की कस्रत अच्छी लगे, सो ऐ अ़क़्ल वालो! अल्लाह से डरो ताकि तुम फ़लाह (कामयाबी और नजात) पाओ। (100)

ऐ ईमान वालो! न पूछो उन चीज़ों के मुतअ़ल्लिक़ जो तुम्हारे लिए ज़ाहिर की जाएं तो तुम्हें बुरी लगें, और अगर उन के मुतअ़ल्लिक़ (ऐसे वक़्त) पूछोगे जब क़ुरआन नाज़िल किया जा रहा है तो तुम्हारे लिए ज़ाहिर कर दी जाएगी, अल्लाह ने उस से दरगुज़र की, और अल्लाह बख़्शने वाला बुर्दबार है। (101)

इसी क़िस्म के सवालात तुम से क़ब्ल एक क़ौम ने पूछा, फिर वह उस से मुन्किर हो गए। (102)

अल्लाह ने नहीं बनाया बहीरा और न साइबा, और न वसीला और न हाम, लेकिन जिन लोगों ने कुफ़्र किया वह अल्लाह पर झूट बान्धते हैं, और उन के अक्सर अ़क़्ल नहीं रखते। (103)

وَاِذَا قِيۡلَ لَهُمۡ تَعَالَوۡا اِلٰى مَاۤ اَنۡزَلَ اللّٰهُ وَاِلَى الرَّسُوۡلِ قَالُوۡا

वह कहते हैं	रसूल	और तरफ़	अल्लाह ने नाज़िल किया	जो	तरफ़	आओ तुम	उन से	कहा जाए	और जब

حَسۡبُنَا مَا وَجَدۡنَا عَلَيۡهِ اٰبَآءَنَا ؕ اَوَلَوۡ كَانَ اٰبَآؤُهُمۡ لَا يَعۡلَمُوۡنَ

जानते	न	उन के बाप दादा	क्या ख़ाह हों	अपने बाप दादा	उस पर	जो हम ने पाया	हमारे लिए काफ़ी

شَيۡـئًا وَّلَا يَهۡتَدُوۡنَ ﴿١٠٤﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا عَلَيۡكُمۡ اَنۡفُسَكُمۡ ۚ

अपनी जानें	तुम पर	ईमान वाले	ऐ	104	और न हिदायत याफ़्ता हों	कुछ

لَا يَضُرُّكُمۡ مَّنۡ ضَلَّ اِذَا اهۡتَدَيۡتُمۡ ؕ اِلَى اللّٰهِ مَرۡجِعُكُمۡ جَمِيۡعًا فَيُنَبِّئُكُمۡ

फिर वह तुम्हें जतला देगा	सब	तुम्हें लौटना है	अल्लाह की तरफ़	हिदायत पर हो	जब	गुमराह हुआ	जो	न नुक़्सान पहुँचाएगा

بِمَا كُنۡتُمۡ تَعۡمَلُوۡنَ ﴿١٠٥﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا شَهَادَةُ بَيۡنِكُمۡ اِذَا

जब	तुम्हारे दरमियान	गवाही	ईमान वाले	ऐ	105	तुम करते थे	जो

حَضَرَ اَحَدَكُمُ الۡمَوۡتُ حِيۡنَ الۡوَصِيَّةِ اثۡنٰنِ ذَوَا عَدۡلٍ مِّنۡكُمۡ

तुम से	इन्साफ़ वाले (मोतबर)	दो	वसीयत	वक़्त	मौत	तुम में से किसी को	आए

اَوۡ اٰخَرٰنِ مِنۡ غَيۡرِكُمۡ اِنۡ اَنۡتُمۡ ضَرَبۡتُمۡ فِى الۡاَرۡضِ فَاَصَابَتۡكُمۡ

फिर तुम्हें पहुँचे	ज़मीन में	सफ़र कर रहे हो	तुम	अगर	तुम्हारे सिवा	से	और दो	या

مُّصِيۡبَةُ الۡمَوۡتِ ؕ تَحۡبِسُوۡنَهُمَا مِنۡۢ بَعۡدِ الصَّلٰوةِ فَيُقۡسِمٰنِ بِاللّٰهِ

अल्लाह की	दोनों क़सम खाएं	नमाज़	बाद	उन दोनो को रोक लो	मौत	मुसीबत

اِنِ ارۡتَبۡتُمۡ لَا نَشۡتَرِىۡ بِهٖ ثَمَنًا وَّلَوۡ كَانَ ذَا قُرۡبٰى ۙ وَلَا نَكۡتُمُ

और हम नहीं छुपाते	रिशतेदार	ख़ाह हों	कोई क़ीमत	इस के इवज़	हम मोल नहीं लेते	तुम्हें शक हो	अगर

شَهَادَةَ ۙ اللّٰهِ اِنَّاۤ اِذًا لَّمِنَ الۡاٰثِمِيۡنَ ﴿١٠٦﴾ فَاِنۡ عُثِرَ عَلٰۤى اَنَّهُمَا اسۡتَحَقَّاۤ

दोनों सज़ावार हुए	कि वह दोनों	उस पर	ख़बर हो जाए	फिर अगर	106	गुनाहगारों	से	उस वक़्त	बेशक हम	अल्लाह	गवाही

اِثۡمًا فَاٰخَرٰنِ يَقُوۡمٰنِ مَقَامَهُمَا مِنَ الَّذِيۡنَ اسۡتَحَقَّ عَلَيۡهِمُ

उन पर	मुसतहिक़(जिन का हक़ मारना चाहा)	वह लोग	से	उन की जगह	खड़े हों	तो दो और	गुनाह

الۡاَوۡلَيٰنِ فَيُقۡسِمٰنِ بِاللّٰهِ لَشَهَادَتُنَاۤ اَحَقُّ مِنۡ شَهَادَتِهِمَا

उन दोनों की गवाही	से	ज़ियादा सही	कि हमारी गवाही	अल्लाह की	फिर वह क़सम खाएं	सब से ज़ियादा क़रीब

وَمَا اعۡتَدَيۡنَاۤ ۖ اِنَّاۤ اِذًا لَّمِنَ الظّٰلِمِيۡنَ ﴿١٠٧﴾ ذٰلِكَ اَدۡنٰۤى اَنۡ

कि	ज़ियादा क़रीब	यह	107	ज़ालिम (जमा)	अलबत्ता-से	उस सूरत में	बेशक हम	हम ने ज़ियादती की	और नहीं

يَّاۡتُوۡا بِالشَّهَادَةِ عَلٰى وَجۡهِهَاۤ اَوۡ يَخَافُوۡۤا اَنۡ تُرَدَّ اَيۡمَانٌۢ بَعۡدَ اَيۡمَانِهِمۡ ؕ

उन की क़सम	बाद	क़सम	कि रद् कर दीजाएगी	वह डरें	या	उस का रुख़ (सही तरीक़ा)	पर	वह लाएं (अदा करें) गवाही

وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاسۡمَعُوۡا ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهۡدِى الۡقَوۡمَ الۡفٰسِقِيۡنَ ﴿١٠٨﴾ ع ١٤ ٨ ٤

108	नाफ़रमान (जमा)	क़ौम	नहीं हिदायत देता	और अल्लाह	और सुनो	और डरो अल्लाह से

और जब उन से कहा जाए आओ उस की तरफ़ जो अल्लाह ने नाज़िल किया और रसूल (स) की तरफ़ (तो) वह कहते हैं हमारे लिए वह काफ़ी है जिस पर हम ने अपने बाप दादा को पाया, तो क्या (उस सूरत में भी कि) उन के बाप दादा कुछ न जानते हों और न हिदायत याफ़्ता हों। (104)

ऐ ईमान वालो! तुम पर अपनी जानों (की फ़िक्र लाज़िम) है, जब तुम हिदायत पर हो तो जो गुमराह हुआ तुम्हें नुक़्सान न पहँचा सकेगा। तुम सब को अल्लाह की तरफ़ लौटना है, फिर वह तुम्हें जतला देगा जो तुम करते थे। (105)

ऐ ईमान वालो! तुम्हारे दरमियान गवाही (का तरीक़ा यह है) कि जब तुम में से किसी को मौत आए वसीयत के वक़्त तुम में से दो मोतबर शख़्स हों या तुम्हारे सिवा दो और, अगर तुम ज़मीन में सफ़र कर रहे हो, फिर तुम्हें मौत की मुसीबत पहुँचे, उन दोनो को रोक लो नमाज़ के बाद, अगर तुम्हें शक हो तो दोनों अल्लाह की क़सम खाएं कि हम उस के इवज़ कोई क़ीमत मोल नहीं लेते ख़ाह रिशतेदार हों, और हम अल्लाह की गवाही नहीं छुपाते (वरना) हम बेशक गुनाहगारों में से हैं। (106)

फिर अगर उस की ख़बर हो जाए कि वह दोनों गुनाह के सज़ावार हुए हैं तो उन की जगह उन में से दो और खड़े हों जिन का हक़ मारना चाहा जो सब से ज़ियादा (मय्यत के) क़रीब हों, फिर वह अल्लाह की क़सम खाएं कि हमारी गवाही उन दोनों की गवाही से ज़ियादा सही है और हम ने ज़ियादती नहीं की (वरना) उस सूरत में हम बेशक ज़ालिमों में से होंगे। (107)

यह क़रीब तर है कि वह गवाही उस के सही तरीक़े पर अदा करें या वह डरें कि (हमारी) क़सम उन की क़सम के बाद रद् कर दी जाएगी, और अल्लाह से डरो और सुनो और अल्लाह नहीं हिदायत देता नाफ़रमान क़ौम को। (108)

يَوْمَ يَجْمَعُ اللّٰهُ الرُّسُلَ فَيَقُوْلُ مَاذَآ اُجِبْتُمْ ؕ قَالُوْا لَا عِلْمَ

नहीं ख़बर	वह कहेंगे	तुम्हें जवाब मिला	क्या	फिर कहेगा	रसूल (जमा)	जमा करेगा अल्लाह	दिन

لَنَا ؕ اِنَّكَ اَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ ﴿١٠٩﴾ اِذْ قَالَ اللّٰهُ يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ

इब्ने मरयम (अ)	ऐ ईसा (अ)	अल्लाह ने कहा	जब	109	छुपी बातें	जानने वाला	तू	बेशक तू	हमें

وقف لازم

اذْكُرْ نِعْمَتِيْ عَلَيْكَ وَعَلٰى وَالِدَتِكَ ۘ اِذْ اَيَّدْتُّكَ بِرُوْحِ الْقُدُسِ ؗ

रूहे पाक से	जब मैं ने तेरी मदद की	तेरी (अपनी) वालिदा	और पर	तुझ (आप) पर	मेरी नेमत	याद कर

تُكَلِّمُ النَّاسَ فِي الْمَهْدِ وَكَهْلًا ۚ وَاِذْ عَلَّمْتُكَ الْكِتٰبَ

किताब	तुझे सिखाई	और जब	और बड़ी उमर	पन्घोड़े में	लोग	तू बातें करता था

وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ ۚ وَاِذْ تَخْلُقُ مِنَ الطِّيْنِ

मिट्टी	से	तू बनाता था	और जब	और इन्जील	और तौरात	और हिक्मत

كَهَيْـَٔةِ الطَّيْرِ بِاِذْنِيْ فَتَنْفُخُ فِيْهَا فَتَكُوْنُ طَيْرًا بِاِذْنِيْ

मेरे हुक्म से	उड़ने वाला	तो वह हो जाता	फिर फूंक मारता था उस में	मेरे हुक्म से	परिन्दे की सूरत

وَتُبْرِئُ الْاَكْمَهَ وَالْاَبْرَصَ بِاِذْنِيْ ۚ وَاِذْ تُخْرِجُ الْمَوْتٰى بِاِذْنِيْ ۚ

मेरे हुक्म से	मुर्दा	निकाल खड़ा करता	और जब	मेरे हुक्म से	और कोढ़ी	मादरज़ाद अन्धा	और शिफ़ा देता

وَاِذْ كَفَفْتُ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ عَنْكَ اِذْ جِئْتَهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ

निशानियों के साथ	जब तू उन के पास आया	तुझ से	बनी इस्राईल	मैं ने रोका	और जब

فَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿١١٠﴾

110	खुला	जादू	मगर (सिर्फ़)	यह	नहीं	उन से	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	तो कहा

وَاِذْ اَوْحَيْتُ اِلَى الْحَوَارِيّٖنَ اَنْ اٰمِنُوْا بِيْ وَبِرَسُوْلِيْ ۚ قَالُوْٓا

उन्हों ने कहा	और मेरे रसूल (अ) पर	ईमान लाओ मुझ पर	कि	हवारी (जमा)	तरफ़	मैं ने दिल में डाल दिया	और जब

اٰمَنَّا وَاشْهَدْ بِاَنَّنَا مُسْلِمُوْنَ ﴿١١١﴾ اِذْ قَالَ الْحَوَارِيُّوْنَ

हवारी (जमा)	जब कहा	111	फ़रमांबरदार	कि बेशक हम	और आप गवाह रहें	हम ईमान लाए

يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ هَلْ يَسْتَطِيْعُ رَبُّكَ اَنْ يُّنَزِّلَ

उतारे	कि वह	तुम्हारा रब	कर सकता है	क्या	इब्ने मरयम (अ)	ऐ ईसा (अ)

عَلَيْنَا مَآئِدَةً مِّنَ السَّمَآءِ ؕ قَالَ اتَّقُوا اللّٰهَ اِنْ كُنْتُمْ

तुम हो	अगर	अल्लाह से डरो	उस ने कहा	आस्मान	से	ख़ान	हम पर

مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١١٢﴾ قَالُوْا نُرِيْدُ اَنْ نَّاْكُلَ مِنْهَا وَتَطْمَئِنَّ قُلُوْبُنَا

हमारे दिल	और मुत्मईन हों	उस से	हम खाएं	कि	हम चाहते हैं	उन्हों ने कहा	112	मोमिन (जमा)

الرّبع

وَنَعْلَمَ اَنْ قَدْ صَدَقْتَنَا وَنَكُوْنَ عَلَيْهَا مِنَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿١١٣﴾

113	गवाह (जमा)	से	उस पर	और हम रहें	तुम ने हम से सच कहा	कि	और हम जान लें

अल्लाह जिस दिन रसूलों को जमा करेगा, फिर कहेगा तुम्हें क्या जवाब मिला था? वह कहेंगे हमें ख़बर नहीं, बेशक तू छुपी बातों को जानने वाला है। (109)

जब अल्लाह ने कहा ऐ ईसा (अ) इब्ने मरयम (अ)! मेरी नेमत अपने ऊपर और अपनी वालिदा पर याद करो जब मैं ने रूहे पाक (जिब्राईल) से तुम्हारी मदद की, तुम लोगों से पन्घोड़े में और बुढ़ापे में बातें करते थे, और जब में ने तुम्हें सिखाई किताब और हिक्मत और तौरात और इन्जील, और जब तुम मेरे हुक्म से मिट्टी से परिन्दे की सूरत बनाते थे, फिर उस में फूंक मारते थे तो वह हो जाता मेरे हुक्म से उड़ने वाला, और तुम मादरज़ाद अन्धे और कोढ़ी को मेरे हुक्म से शिफ़ा देते थे, और जब तुम मुर्दे को मेरे हुक्म से निकाल खड़ा करते थे, और जब मैं ने बनी इस्राईल को तुम से रोका जब तुम खुली निशानियों के साथ उन के पास आए तो काफ़िरों ने उन में से कहा यह सिर्फ़ खुला जादू है। (110)

और जब मैं ने हवारियों के दिल में डाल दिया कि मुझ पर और मेरे रसूल (अ) पर ईमान लाओ, उन्हों ने कहा हम ईमान लाए और आप गवाह रहें बेशक हम फ़रमांबरदार हैं। (111)

जब हवारियों ने कहा ऐ ईसा इब्ने मरयम (अ)! क्या तेरा रब यह कर सकता है कि हम पर आस्मान से ख़ान उतारे? उस ने कहा अल्लाह से डरो अगर तुम मोमिन हो। (112)

उन्हों ने कहा हम चाहते हैं कि उस में से खाएं और हमारे दिल मुत्मईन हों और हम जान लें कि तुम ने हम से सच कहा और हम उस पर गवाह रहें। (113)

قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ اللّٰهُمَّ رَبَّنَآ اَنْزِلْ عَلَيْنَا مَآئِدَةً مِّنَ السَّمَآءِ

आस्मान	से	ख़ान	हम पर	उतार	हमारे रब	ऐ अल्लाह	इब्ने मरयम (अ)	ईसा (अ)	कहा

تَكُوْنُ لَنَا عِيْدًا لِّاَوَّلِنَا وَاٰخِرِنَا وَاٰيَةً مِّنْكَ ۚ وَارْزُقْنَا وَاَنْتَ

और तू	और हमें रोज़ी दे	तुझ से	और निशानी	और हमारे पिछले	हमारे पहलों के लिए	ईद	हमारे लिए	हो

خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ﴿١١٤﴾ قَالَ اللّٰهُ اِنِّيْ مُنَزِّلُهَا عَلَيْكُمْ ۚ فَمَنْ يَّكْفُرْ بَعْدُ

बाद	नाशुक्री करेगा	फिर जो	तुम पर	वह उतारूंगा	बेशक मैं	कहा अल्लाह ने	114	रोज़ी देने वाला	बेहतर

مِنْكُمْ فَاِنِّيْٓ اُعَذِّبُهٗ عَذَابًا لَّآ اُعَذِّبُهٗٓ اَحَدًا مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١١٥﴾ ع ١٥ ٥

115	जहान वाले	से	किसी को	अज़ाब दूँगा	न	उसे अज़ाब दूँगा ऐसा अज़ाब	तो मैं	तुम से

وَاِذْ قَالَ اللّٰهُ يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ ءَاَنْتَ قُلْتَ لِلنَّاسِ اتَّخِذُوْنِيْ

मुझे ठहरा लो	लोगों से	तू ने कहा	क्या तू	इब्ने मरयम (अ)	ऐ ईसा (अ)	अल्लाह ने कहा	और जब

وَاُمِّيَ اِلٰهَيْنِ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۭ قَالَ سُبْحٰنَكَ مَا يَكُوْنُ لِيْٓ اَنْ اَقُوْلَ

मैं कहूँ	कि	मेरे लिए	है	नहीं	तू पाक है	उस ने कहा	अल्लाह के सिवा	से	दो माबूद	और मेरी माँ

مَا لَيْسَ لِيْ ۤ بِحَقٍّ ۭ اِنْ كُنْتُ قُلْتُهٗ فَقَدْ عَلِمْتَهٗ ۭ تَعْلَمُ مَا فِيْ نَفْسِيْ وقف النبی ﷺ

मेरा दिल	में	जो	तू जानता है	तो तुझे ज़रूर उस का इल्म होता	मैं ने यह कहा होता	अगर	हक़	मेरे लिए	नहीं

وَلَآ اَعْلَمُ مَا فِيْ نَفْسِكَ ۭ اِنَّكَ اَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ ﴿١١٦﴾ مَا قُلْتُ لَهُمْ

उन्हें	मैं ने नहीं कहा	116	छुपी बातें	जानने वाला	तू	बेशक तू	तेरे दिल में	जो	और मैं नहीं जानता

اِلَّا مَآ اَمَرْتَنِيْ بِهٖٓ اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ رَبِّيْ وَرَبَّكُمْ ۚ وَكُنْتُ عَلَيْهِمْ

उन पर	और मैं था	और तुम्हारा रब	मेरा रब	तुम अल्लाह की इबादत करो	कि	उस का	जो तू ने मुझे हुक्म दिया	मगर

شَهِيْدًا مَّا دُمْتُ فِيْهِمْ ۚ فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِيْ كُنْتَ اَنْتَ الرَّقِيْبَ عَلَيْهِمْ ۭ

उन पर	निगरान	तू	तो था	तू ने मुझे उठा लिया	फिर जब	उन में	जब तक मैं रहा	ख़बरदार

وَاَنْتَ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ﴿١١٧﴾ اِنْ تُعَذِّبْهُمْ فَاِنَّهُمْ عِبَادُكَ ۚ وَاِنْ

और अगर	तेरे बन्दे	तो बेशक वह	तू उन्हें अज़ाब दे	अगर	117	बाख़बर	हर शै	पर-से	और तू

تَغْفِرْ لَهُمْ فَاِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿١١٨﴾ قَالَ اللّٰهُ هٰذَا يَوْمُ يَنْفَعُ

नफ़ा देगा	दिन	यह	अल्लाह ने फ़रमाया	118	हिक्मत वाला	ग़ालिब	तू	तो बेशक तू	उन को	तू बख़शदे

الصّٰدِقِيْنَ صِدْقُهُمْ ۭ لَهُمْ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ

हमेशा रहेंगे	नहरें	उन के नीचे	बहती हैं	बाग़ात	उन के लिए	उन का सच	सच्चे

فِيْهَآ اَبَدًا ۭ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ ۭ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿١١٩﴾

119	बड़ी	कामयाबी	यह	उस से	और वह राज़ी हुए	उन से	अल्लाह राज़ी हुआ	हमेशा	उन में

لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا فِيْهِنَّ ۭ وَهُوَ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٢٠﴾ ع ١٦ ٥ ٦

120	क़ुदरत वाला-क़ादिर	हर शै	पर	और वह	उन के दरमियान	और जो	और ज़मीन	बादशाहत आस्मानों की	अल्लाह के लिए

ईसा (अ) इब्ने मरयम (अ) ने कहा ऐ अल्लाह! हमारे रब! हम पर आस्मान से ख़ान उतार कि हमारे पहलों और पिछलों के लिए ईद हो और तेरी तरफ़ से निशानी हो, और हमें रोज़ी दे, तू सब से बेहतर रोज़ी देने वाला है। (114)

अल्लाह ने कहा बेशक मैं वह तुम पर उतारूंगा। फिर उस के बाद तुम में से जो नाशुक्री करेगा तो में उस को ऐसा अ़ज़ाब दूँगा जो न अ़ज़ाब दूँगा जहान वालों में से किसी को। (115)

और जब अल्लाह ने कहा ऐ ईसा (अ) इब्ने मरयम (अ)! क्या तू ने लोगों से कहा था कि मुझे और मेरी माँ को अल्लाह के सिवा दो माबूद ठहरा लो, उस ने कहा तू पाक है, मेरे लिए (रवा) नहीं कि मैं (ऐसी बात) कहूँ जिस का मुझे हक़ नहीं। अगर मैं ने यह कहा होता तो तुझे ज़रूर उस का इल्म होता, तू जानता है जो मेरे दिल में है और मैं नहीं जानता जो तेरे दिल में है। बेशक तू छुपी बातों को जानने वाला है। (116)

मैं ने उन्हें नहीं कहा मगर सिर्फ़ वह जिस का तू ने मुझे हुक्म दिया कि तुम अल्लाह की इबादत करो जो मेरा और तुम्हारा रब है, और मैं जब तक उन में रहा उन पर ख़बरदार (बाख़बर) था। फिर जब तू ने मुझे उठा लिया तो उन पर तू निगरान था और तू हर शै से बाख़बर है। (117)

अगर तू उन्हें अ़ज़ाब दे तो बेशक वह तेरे बन्दे हैं, और अगर तू बख़्श दे उन को तो बेशक तू ग़ालिब हिक्मत वाला है। (118)

अल्लाह ने फ़रमाया यह दिन है कि सच्चों को नफ़ा देगा उन का सच, उन के लिए बाग़ात हैं जिन के नीचे नेहरें बहती हैं, वह उन में हमेशा रहेंगे, अल्लाह राज़ी हुआ उन से और वह राज़ी हुए उस से, यह बड़ी कामयाबी है। (119)

अल्लाह के लिए है बादशाहत आस्मानों की और ज़मीन की और जो कुछ उन के दरमियान है, और वह हर शै पर क़ादिर है। (120)

آيَاتُهَا ١٦٥ ❀ سُوْرَةُ الْاَنْعَامِ (٦) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٢٠

रुकूआत 20 | (6) सूरतुल अनआ़म – मवेशी | आयात 165

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَجَعَلَ الظُّلُمٰتِ

अन्धेरों	और बनाया	और ज़मीन	आस्मान (जमा)	पैदा किया	वह जिस ने	तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए

وَالنُّوْرَ ۭ ثُمَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُوْنَ (١) هُوَ الَّذِىْ

जिस ने	वह	1	बराबर करते हैं	अपने रब के साथ	कुफ़्र किया (काफ़िर)	जिन्हों ने	फिर	और रौशनी

خَلَقَكُمْ مِّنْ طِيْنٍ ثُمَّ قَضٰٓى اَجَلًا ۭ وَاَجَلٌ مُّسَمًّى عِنْدَهٗ ثُمَّ اَنْتُمْ

तुम	फिर	उस के हाँ	मुक़र्रर	और एक वक़्त	एक वक़्त	मुक़र्रर किया	फिर	मिट्टी	से	तुम्हें पैदा किया

تَمْتَرُوْنَ (٢) وَهُوَ اللّٰهُ فِى السَّمٰوٰتِ وَفِى الْاَرْضِ ۭ يَعْلَمُ سِرَّكُمْ

तुम्हारा बातिन	वह जानता है	ज़मीन	और में	आस्मान (जमा)	में	अल्लाह	और वह	2	शक करते हो

وَجَهْرَكُمْ وَيَعْلَمُ مَا تَكْسِبُوْنَ (٣) وَمَا تَاْتِيْهِمْ مِّنْ اٰيَةٍ مِّنْ اٰيٰتِ

निशानियां	से	निशानी	से- कोई	और उन के पास नहीं आई	3	जो तुम कमाते हो	और जानता है	और तुम्हारा ज़ाहिर

رَبِّهِمْ اِلَّا كَانُوْا عَنْهَا مُعْرِضِيْنَ (٤) فَقَدْ كَذَّبُوْا بِالْحَقِّ لَمَّا جَاۗءَهُمْ ۭ

उन के पास आया	जब	हक़ को	पस बेशक उन्हों ने झुटलाया	4	मुँह फेरने वाले	उस से	होते हैं वह	मगर	उन का रब

فَسَوْفَ يَاْتِيْهِمْ اَنْۢبٰۗؤُا مَا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ (٥) اَلَمْ يَرَوْا كَمْ

कितनी	क्या उन्हों ने नहीं देखा	5	मज़ाक़ उड़ाते	उस का	जो वह थे	ख़बर (हक़ीक़त)	उन के पास आजाएगी	सो जल्द

اَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ قَرْنٍ مَّكَّنّٰهُمْ فِى الْاَرْضِ مَا لَمْ نُمَكِّنْ لَّكُمْ

तुम्हें	नहीं जमाया	जो	ज़मीन (मुल्क) में	हम ने उन्हें जमा दिया था	उम्मतें	से	उन से क़ब्ल	से	हम ने हलाक कर दीं

وَاَرْسَلْنَا السَّمَاۗءَ عَلَيْهِمْ مِّدْرَارًا ۠ وَّجَعَلْنَا الْاَنْهٰرَ تَجْرِيْ مِنْ

से	बहती हैं	नहरें	और हम ने बनाईं	मूसलाधार	उन पर	बादल	और हम ने भेजा

تَحْتِهِمْ فَاَهْلَكْنٰهُمْ بِذُنُوْبِهِمْ وَاَنْشَاْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ قَرْنًا اٰخَرِيْنَ (٦)

6	दूसरी	उम्मतें	उन के बाद	से	और हम ने खड़ी कीं	उन के गुनाहों के सबब	फिर हम ने उन्हें हलाक किया	उन के नीचे

وَلَوْ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ كِتٰبًا فِيْ قِرْطَاسٍ فَلَمَسُوْهُ بِاَيْدِيْهِمْ لَقَالَ

अलबत्ता कहेंगे	अपने हाथों से	फिर उसे छू लें	काग़ज़	में	कुछ लिखा हुआ	तुम पर	और अगर हम उतारें

الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ (٧) وَقَالُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ

क्यों नहीं उतारा गया	और कहते हैं	7	खुला	जादू	मगर	नहीं यह	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)

عَلَيْهِ مَلَكٌ ۭ وَلَوْ اَنْزَلْنَا مَلَكًا لَّقُضِيَ الْاَمْرُ ثُمَّ لَا يُنْظَرُوْنَ (٨)

8	उन्हें मोहलत न दी जाती	फिर	काम	तो तमाम हो गया होता	फ़रिश्ता	हम उतारते	और अगर	फ़रिश्ता	उस पर

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जिस ने आस्मानों और ज़मीन को पैदा किया और अन्धेरों और रौशनी को बनाया, फिर काफ़िर अपने रब के साथ बराबर करते हैं (औरों को बराबर ठहराते हैं)। (1)

वह जिस ने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, फिर ज़िन्दगी की मुददत मुक़र्रर कि, और उस के हाँ एक वक़्त (क़ियामत का) मुक़र्रर है, फिर तुम शक करते हो। (2)

और वही है अल्लाह आस्मानों में और ज़मीन में, वह तुम्हारा बातिन और तुम्हारा ज़ाहिर जानता है और जानता है जो तुम कमाते हो (करते हो)। (3)

और उन के पास नहीं आई उन के रब की निशानियों में से कोई निशानी मगर वह उस से मुँह फेर लेते हैं। (4)

पस बेशक उन्हों ने हक़ को झुटलाया जब उन के पास आया। सो जल्द ही उस की हक़ीक़त उन के सामने आजाएगी जिस का वह मज़ाक़ उड़ाते थे। (5)

क्या उन्हों ने नहीं देखा? हम ने उन से क़ब्ल कितनी उम्मतें हलाक कीं? हम ने उन्हें मुल्क में जमाया था (इक़्तिदार दिया था) जितना तुम्हें नहीं जमाया (इक़्तिदार दिया) और हम ने उन पर मूसलाधार (बरस्ता) बादल भेजा, और हम ने नहरें बनाईं जो उन के नीचे बहती थें, फिर हम ने उन के गुनाहों के सबब उन्हें हलाक किया और उन के बाद हम ने दूसरी उम्मतें खड़ी कीं (बदल दीं)। (6)

और अगर हम उतारें तुम पर काग़ज़ में लिखा हुआ, फिर वह उसे अपने हाथों से छू (भी) लें। अलबत्ता काफ़िर कहेंगे यह नहीं है मगर (सिर्फ़) खुला जादू। (7)

और कहते हैं उस पर फ़रिश्ता क्यों नहीं उतारा गया? और अगर हम फ़रिश्ता उतारते तो काम तमाम हो गया होता, फिर उन्हें मोहलत न दी जाती। (8)

وَلَوْ جَعَلْنٰهُ مَلَكًا لَّجَعَلْنٰهُ رَجُلًا وَّلَلَبَسْنَا عَلَيْهِمْ

उन पर	और हम शुबा डालते	आदमी	तो हम उसे बनाते	फ़रिश्ता	हम उसे बनाते	और अगर

مَّا يَلْبِسُوْنَ ﴿٩﴾ وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَحَاقَ

तो घेर लिया	आप (स) से पहले	से	रसूलों के साथ	हँसी की गई	और अल्बत्ता	9	जो वह शुबा करते हैं

بِالَّذِيْنَ سَخِرُوْا مِنْهُمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿١٠﴾ قُلْ ع ١٠ ٧

आप कह दें	10	हँसी करते	उस पर	वह थे	जो-जिस	उन से	हँसी की	उन लोगों को जिन्हों ने

سِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ ثُمَّ انْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ﴿١١﴾

11	झुटलाने वाले	अन्जाम	हुआ	कैसा	देखो	फिर	ज़मीन (मुल्क) में	सैर करो

قُلْ لِّمَنْ مَّا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ قُلْ لِّلّٰهِ ؕ كَتَبَ عَلٰى نَفْسِهِ

अपने (नफ़्स) आप पर	लिखी है	कह दें अल्लाह के लिए	और ज़मीन	आस्मानों में	जो	किस के लिए	आप पूछें

الرَّحْمَةَ ؕ لَيَجْمَعَنَّكُمْ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَا رَيْبَ فِيْهِ ؕ اَلَّذِيْنَ

जो लोग	उस में	नहीं शक	क़ियामत का दिन	तुम्हें ज़रूर जमा करेगा	रहमत

خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٢﴾ وَلَهٗ مَا سَكَنَ فِي الَّيْلِ

रात	में	बस्ता है	जो	और उस के लिए	12	ईमान नहीं लाएंगे	तो वही	अपने आप	ख़सारे में डाला

وَالنَّهَارِ ؕ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿١٣﴾ قُلْ اَغَيْرَ اللّٰهِ اَتَّخِذُ وَلِيًّا

कारसाज़	मैं बनाऊँ	अल्लाह	क्या सिवाए	आप (स) कह दें	13	जानने वाला	सुनने वाला	और वह	और दिन

فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَهُوَ يُطْعِمُ وَلَا يُطْعَمُ ؕ قُلْ

आप (स) कह दें	और खाता नहीं	खिलाता है	और वह	और ज़मीन	आस्मान (जमा)	बनाने वाला

اِنِّيْٓ اُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ اَوَّلَ مَنْ اَسْلَمَ وَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ

से	और तू हरगिज़ न हो	हुक्म माना	जो-जिस	सब से पहला	मैं हो जाऊँ	कि	बेशक मुझ को हुक्म दिया गया

الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٤﴾ قُلْ اِنِّيْٓ اَخَافُ اِنْ عَصَيْتُ رَبِّيْ عَذَابَ

अ़ज़ाब	अपना रब	मैं नाफ़रमानी करूँ	अगर	मैं डरता हूँ	बेशक मैं	आप (स) कह दें	14	शिर्क करने वाले

يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿١٥﴾ مَنْ يُّصْرَفْ عَنْهُ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمَهٗ ؕ

उस पर रहम किया	तहक़ीक़	उस दिन	उस से	फेर दिया जाए	जो-जिस	15	बड़ा दिन

وَذٰلِكَ الْفَوْزُ الْمُبِيْنُ ﴿١٦﴾ وَاِنْ يَّمْسَسْكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ

दूर करने वाला	तो नहीं	कोई सख़्ती	तुम्हें पहुँचाए अल्लाह	और अगर	16	कामयाबी खुली	और यह

لَهٗٓ اِلَّا هُوَ ؕ وَاِنْ يَّمْسَسْكَ بِخَيْرٍ فَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ

हर शै	पर	तो वह	कोई भलाई	वह पहुँचाए तुम्हें	और अगर	उस के सिवा	उस का

قَدِيْرُ ﴿١٧﴾ وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهٖ ؕ وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ ﴿١٨﴾

18	ख़बर रखने वाला	हिक्मत वाला	और वह	अपने बन्दे	ऊपर	ग़ालिब	और वह	17	क़ादिर

और अगर हम उसे फ़रिश्ता बनाते तो हम उसे आदमी (ही) बनाते, और हम उन पर शुबा डालते (जिस में वह अब) पड़ रहे हैं। (9)

और अल्बत्ता आप (स) से पहले रसूलों के साथ हँसी की गई, तो घेर लिया उन में से हँसी करने वालों को (उस चीज़ ने) जिस पर वह हँसी करते थे। (10)

आप (स) कह दें मुल्क में सैर करो (चल फिर कर देखो) फिर देखो झुटलाने वालों का अन्जाम कैसा हूआ? (11)

आप (स) पूछें किस के लिए है जो आस्मानों में और ज़मीन में है? कह दें (सब) अल्लाह के लिए है, अल्लाह ने अपने ऊपर रहमत लिख ली है (अपने ज़िम्में ले ली है), क़ियामत के दिन तुम्हें ज़रूर जमा करेगा जिस में कोई शक नहीं, जिन लोगों ने अपने आप को ख़सारे में डाला तो वही ईमान नहीं लाएंगे। (12)

और उस के लिए है जो बस्ता है रात में और दिन में, और वह सुनने वाला जानने वाला है। (13)

आप (स) कह दें क्या मैं अल्लाह के सिवाए (किसी और को) कारसाज़ बनाऊँ? (जो) आस्मानों और ज़मीन का बनाने वाला है, वह (सब को) खिलाता है और वह खुद नहीं खाता। आप (स) कह दें बेशक मुझे हुक्म दिया गया है कि सब से पहला हो जाऊँ जिस ने हुक्म माना, और तुम हरगिज़ शिर्क करने वालों से न होना। (14)

आप (स) कह दें बेशक अगर मैं अपने रब की नाफ़रमानी करुं तो बड़े दिन के अ़ज़ाब से डरता हूँ। (15)

उस दिन जिस से (अ़ज़ाब) फेर दिया जाए, तहक़ीक़ उस पर अल्लाह ने रहम किया और यह खुली कामयाबी है। (16)

और अगर अल्लाह तुम्हें सख़्ती पहुँचाए तो कोई दूर करने वाला नहीं उस को उस के सिवा, और अगर वह कोई भलाई पहुँचाए तुम्हें तो वह हर शै पर क़ादिर है। (17)

और वह अपने बन्दों पर ग़ालिब है, और वह हिक्मत वाला (सब की) ख़बर रखने वाला है। (18)

قُلْ اَیُّ شَیْءٍ اَكْبَرُ شَهَادَةً ؕ قُلِ اللّٰهُ ۙ۫ شَهِیْدٌۢ بَیْنِیْ وَبَیْنَكُمْ ۫

और तुम्हारे दरमियान	मेरे दरमियान	गवाह	अल्लाह	आप (स) कह दें	गवाही	सब से बड़ी	चीज़	कौन सी	आप (स) कहें

وَاُوْحِیَ اِلَیَّ هٰذَا الْقُرْاٰنُ لِاُنْذِرَكُمْ بِهٖ وَمَنْۢ بَلَغَ ؕ اَئِنَّكُمْ

क्या तुम बेशक	पहुँचे	और जिस	इस से	ताकि मैं तुम्हें डराऊँ	क़ुरआन	यह	मुझ पर	और वहि किया गया

لَتَشْهَدُوْنَ اَنَّ مَعَ اللّٰهِ اٰلِهَةً اُخْرٰی ؕ قُلْ لَّاۤ اَشْهَدُ ۚ قُلْ اِنَّمَا

सिर्फ़	आप (स) कह दें	मैं गवाही नहीं देता	आप (स) कह दें	दूसरा	कोई माबूद	अल्लाह के साथ	कि	तुम गवाही देते हो

هُوَ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ وَّاِنَّنِیْ بَرِیْٓءٌ مِّمَّا تُشْرِكُوْنَ ﴿۱۹﴾ اَلَّذِیْنَ اٰتَیْنٰهُمُ

हम ने दी उन्हें	वह जिन्हें	19	तुम शिर्क करते हो	उस से जो	बेज़ार	और बेशक मैं	यकता	माबूद	वह

الْكِتٰبَ یَعْرِفُوْنَهٗ كَمَا یَعْرِفُوْنَ اَبْنَآءَهُمْ ؕ اَلَّذِیْنَ خَسِرُوْۤا اَنْفُسَهُمْ

अपने आप	ख़सारे में डाला	वह जिन्हों ने	अपने बेटे	वह पहचानते हैं	जैसे	वह उस को पहचानते हैं	किताब

فَهُمْ لَا یُؤْمِنُوْنَ ﴿۲۰﴾ وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰی عَلَی اللّٰهِ كَذِبًا

झूट	अल्लाह पर	बुहतान बान्धे	उस से जो	सब से बड़ा ज़ालिम	और कौन	20	ईमान नहीं लाते	सो वह

اَوْ كَذَّبَ بِاٰیٰتِهٖ ؕ اِنَّهٗ لَا یُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿۲۱﴾ وَیَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِیْعًا

सब	उन को जमा करेंगे	और जिस दिन	21	ज़ालिम (जमा)	फ़लाह नहीं पाते	बिला शुबा वह	उस की आयतें	या झुटलाए

ثُمَّ نَقُوْلُ لِلَّذِیْنَ اَشْرَكُوْۤا اَیْنَ شُرَكَآؤُكُمُ الَّذِیْنَ كُنْتُمْ

तुम थे	जिन का	तुम्हारे शरीक	कहाँ	शिर्क किया (मुश्रिकों)	उन को जिन्हों ने	हम कहेंगे	फिर

تَزْعُمُوْنَ ﴿۲۲﴾ ثُمَّ لَمْ تَكُنْ فِتْنَتُهُمْ اِلَّاۤ اَنْ قَالُوْا وَاللّٰهِ رَبِّنَا مَا كُنَّا

न थे हम	हमारा रब	क़सम अल्लाह की	वह कहें	कि	सिवाए	उन की शरारत	न होगी- न रही	फिर	22	दावा करते

مُشْرِكِیْنَ ﴿۲۳﴾ اُنْظُرْ كَیْفَ كَذَبُوْا عَلٰۤی اَنْفُسِهِمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ

उन से	और खोई गईं	अपनी जानों	पर	उन्हों ने झूट बान्धा	कैसे	देखो	23	शिर्क करने वाले

مَّا كَانُوْا یَفْتَرُوْنَ ﴿۲۴﴾ وَمِنْهُمْ مَّنْ یَّسْتَمِعُ اِلَیْكَ ۚ وَجَعَلْنَا عَلٰی

पर	और हम ने डाल दिया	आप (स) की तरफ़	कान लगाता था	जो	और उन से	24	वह बातें बनाते थे	जो

قُلُوْبِهِمْ اَكِنَّةً اَنْ یَّفْقَهُوْهُ وَفِیْۤ اٰذَانِهِمْ وَقْرًا ؕ وَاِنْ یَّرَوْا كُلَّ

तमाम	वह देखें	और अगर	बोझ	और उन के कानों में	वह (न) समझें उसे	कि	पर्दे	उन के दिल

اٰیَةٍ لَّا یُؤْمِنُوْا بِهَا ؕ حَتّٰۤی اِذَا جَآءُوْكَ یُجَادِلُوْنَكَ یَقُوْلُ الَّذِیْنَ

जिन लोगों ने	कहते हैं	आप (स) से झगड़ते हैं	आप (स) के पास आते हैं	जब	यहां तक कि	न ईमान लाएंगे उस पर	निशानी

كَفَرُوْۤا اِنْ هٰذَاۤ اِلَّاۤ اَسَاطِیْرُ الْاَوَّلِیْنَ ﴿۲۵﴾ وَهُمْ یَنْهَوْنَ عَنْهُ

उस से	रोकते हैं	और वह	25	पहले लोग (जमा)	कहानियां	मगर (सिर्फ़)	यह	नहीं	उन्हों ने कुफ़्र किया

وَیَنْـَٔوْنَ عَنْهُ ۚ وَاِنْ یُّهْلِكُوْنَ اِلَّاۤ اَنْفُسَهُمْ وَمَا یَشْعُرُوْنَ ﴿۲۶﴾

26	और वह शऊर नहीं रखते	अपने आप	मगर (सिर्फ़)	हलाक करते हैं	और नहीं	उस से	और भागते हैं

وقف لازم
وقف لازم
ع ٢ ٨

आप (स) कहें सब से बड़ी गवाही किस की? आप (स) कह दें मेरे और तुम्हारे दरमियान अल्लाह गवाह है, और मुझ पर यह क़ुरआन वहि किया गया है ताकि मैं तुम्हें इस से डराऊँ और जिस तक यह पहुँचे, क्या तुम (वाक़ई) गवाही देते हो कि अल्लाह के साथ कोई और भी माबूद हैं! आप (स) कह दें मैं (ऐसी) गवाही नहीं देता, आप (स) कह दें सिर्फ़ वह माबूद यकता है, और मैं उस से बेज़ार हूँ जो तुम शिर्क करते हो। (19)

वह लोग जिन्हें हम ने किताब दी वह उस को पहचानते हैं जैसे वह अपने बेटों को पहचानते हैं। जिन लोगो ने ख़सारे में डाला अपने आप को सो वह ईमान नहीं लाते। (20)

और उस से बड़ा ज़ालिम कौन जो अल्लाह पर झूट बुहतान बन्धे या झुटलाए उस की आयतों को, बेशक ज़ालिम फ़लाह (कामयाबी) नहीं पाते। (21)

और जिस दिन हम उन सब को जमा करेंगे, फिर हम कहेंगे मुश्रिकों को: कहां हैं तुम्हारे शरीक जिन का तुम दावा करते थे। (22)

फिर न होगी उन की शरारत (उन का उज़र) इस के सिवा कि वह कहेंगे: हमारे रब अल्लाह की क़सम हम मुश्रिक न थे। (23)

देखो! उन्हों ने कैसे झूट बान्धा अपनी जानों पर और वह जो बातें बनाते थे उन से खोई गईं। (24)

और उन से (बाज़) आप की तरफ़ कान लगाए रखते हैं और हम ने उन के दिलों पर पर्दे डाल दिए हैं कि वह उसे न समझें और उन के कानों में बोझ है, और अगर वह देखें तमाम निशानियां (फिर भी) उस पर ईमान न लाएंगे यहां तक कि जब आप (स) के पास आते हैं तो आप (स) से झगड़ते हैं, कहते हैं वह लोग जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर): यह सिर्फ़ पहलों की कहानियां हैं। (25)

और वह उस से (दूसरों को) रोकते हैं और (खुद भी) उस से भागते हैं, और वह सिर्फ़ अपने आप को हलाक करते हैं और शऊर नहीं रखते। (26)

وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ وُقِفُوْا عَلَى النَّارِ فَقَالُوْا يٰلَيْتَنَا نُرَدُّ وَلَا نُكَذِّبَ

और न झुटलाएं हम	वापस भेजे जाएं	ऐ काश हम	तो कहेंगे	आग	पर	जब खड़े किए जाएंगे	तुम देखो	और अगर (कभी)

بِاٰيٰتِ رَبِّنَا وَنَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٢٧﴾ بَلْ بَدَا لَهُمْ مَّا

जो	ज़ाहिर हो गया उन पर	बल्कि	27	ईमान वाले	से	और हो जाएं हम	अपना रब	आयतों को

كَانُوْا يُخْفُوْنَ مِنْ قَبْلُ ؕ وَلَوْ رُدُّوْا لَعَادُوْا لِمَا نُهُوْا عَنْهُ وَاِنَّهُمْ

और बेशक वह	उस से	वही रोके गए	तो फिर करने लगें	वापस भेजे जाएं	और अगर	उस से पहले	वह छुपाते थे

لَكٰذِبُوْنَ ﴿٢٨﴾ وَقَالُوْٓا اِنْ هِيَ اِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا وَمَا نَحْنُ

हम	और नहीं	दुनिया	हमारी ज़िन्दगी	मगर (सिर्फ़)	है	नहीं	और कहते हैं	28	झूटे

بِمَبْعُوْثِيْنَ ﴿٢٩﴾ وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ وُقِفُوْا عَلٰى رَبِّهِمْ ؕ قَالَ اَلَيْسَ

क्या नहीं	वह फ़रमाएगा	अपना रब	पर (सामने)	खड़े किए जाएंगे	तुम देखो	और अगर (कभी)	29	उठाए जाने वाले

هٰذَا بِالْحَقِّ ؕ قَالُوْا بَلٰى وَرَبِّنَا ؕ قَالَ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا

इस लिए कि	अ़ज़ाब	पस चखो	वह फ़रमाएगा	क़सम हमारे रब की	हां	वह कहेंगे	सच	यह

كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿٣٠﴾ قَدْ خَسِرَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِلِقَآءِ اللّٰهِ ؕ حَتّٰٓى ع ٣ ١٠ ٩

यहां तक कि	अल्लाह से मिलना	वह लोग ज़िन्हों ने झुटलाया	घाटे में पड़े	तहक़ीक़	30	तुम कुफ़्र करते थे

اِذَا جَآءَتْهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً قَالُوْا يٰحَسْرَتَنَا عَلٰى مَا فَرَّطْنَا فِيْهَا ۙ

इस में	जो हम ने कोताही की	पर	हाए हम पर अफ़सोस	वह कहने लगे	अचानक	क़ियामत	आ पहुँची उन पर	जब

وَهُمْ يَحْمِلُوْنَ اَوْزَارَهُمْ عَلٰى ظُهُوْرِهِمْ ؕ اَلَا سَآءَ مَا يَزِرُوْنَ ﴿٣١﴾

31	जो वह उठाएंगे	बुरा	आगाह रहो	अपनी पीठ (जमा)	पर	अपने बोझ	उठाए होंगे	और वह

وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ ؕ وَلَلدَّارُ الْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ

उन के लिए	बेहतर	और आख़िरत का घर	और जी का बेहलावा	खेल	मगर (सिर्फ़)	दुनिया	ज़िन्दगी	और नहीं

يَتَّقُوْنَ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٣٢﴾ قَدْ نَعْلَمُ اِنَّهٗ لَيَحْزُنُكَ الَّذِيْ

जो वह	आप को ज़रूर रंजीदा करती है	कि वह	बेशक हम जानते हैं	32	सो क्या तुम अ़क़्ल से काम नहीं लेते	परहेज़गारी करते हैं

يَقُوْلُوْنَ فَاِنَّهُمْ لَا يُكَذِّبُوْنَكَ وَلٰكِنَّ الظّٰلِمِيْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ

अल्लाह की आयतों का	ज़ालिम लोग	और लेकिन (बल्कि)	नहीं झुटलाते आप (स) को	सो वह यक़ीनन	कहते हैं

يَجْحَدُوْنَ ﴿٣٣﴾ وَلَقَدْ كُذِّبَتْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ فَصَبَرُوْا عَلٰى

पर	पस सब्र किया उन्हों ने	आप (स) से पहले	रसूल (जमा)	और अलबत्ता झुटलाऐ गए	33	इन्कार करते हैं

مَا كُذِّبُوْا وَاُوْذُوْا حَتّٰٓى اَتٰىهُمْ نَصْرُنَا ۚ وَلَا مُبَدِّلَ

और नहीं बदलने वाला	हमारी मदद	उन पर आगई	यहां तक कि	और सताए गए	जो वह झुटलाए गए

لِكَلِمٰتِ اللّٰهِ ۚ وَلَقَدْ جَآءَكَ مِنْ نَّبَاِ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٣٤﴾

34	रसूल (जमा)	ख़बर	से (कुछ)	आप के पास पहुँची	और अलबत्ता	अल्लाह की बातों को

और कभी तुम देखो जब वह आग (दोज़ख़) पर खड़े किए जाएंगे तो कहेंगे ऐ काश! हम वापस भेजे जाएं और अपने रब की आयतों को न झुटलाएं और हो जाएं ईमान वालो में से। (27)

बल्कि वह उस से क़ब्ल जो छुपाते थे उन पर ज़ाहिर हो गया और वह अगर वापस भेजे जाएं तो फिर (वही) करने लगें जिस से वह रोके गए और बेशक वह झूटे हैं। (28)

और कहते हैं हमारी सिर्फ़ यही दुनिया की ज़िन्दगी है और हम उठाए जाने वाले नहीं (हमें फिर ज़िन्दा नहीं होना)। (29)

और कभी तुम देखो जब वह अपने रब के सामने खड़े किए जाएंगे। वह फ़रमाएगा क्या यह नहीं सच, वह कहेंगे हां हमारे रब की क़सम (क्यों नहीं), वह फ़रमाएगा पस अ़ज़ाब चखो इस लिए कि तुम कुफ़्र करते थे। (30)

तहक़ीक़ वह लोग घाटे में पड़े ज़िन्हों ने अल्लाह के मिलने को झुटलाया यहां तक कि जब अचानक उन पर क़ियामत आ पहुँची कहने लगे हाए हम पर अफ़सोस! जो हम ने उस में कोताही की, और वह अपने बोझ अपनी पीठों पर उठाए होंगे। आगाह रहो बुरा है जो वह उठाएंगे। (31)

और दुनिया की ज़िन्दगी सिर्फ़ खेल और जी का बेहलावा है, और आख़िरत का घर उन लोगों के लिए बेहतर है जो परहेज़गारी करते हैं, सो क्या तुम अ़क़्ल से काम नहीं लेते। (32)

बेशक हम जानते हैं आप (स) को वह (बात) ज़रूर रंजीदा करती है जो वह कहते हैं, सो वह यक़ीनन आप (स) को नहीं झुटलाते बल्कि ज़ालिम लोग अल्लाह की आयतों का इन्कार करते हैं। (33)

और अलबत्ता रसूल झुटलाए गए आप (स) से पहले, पस उन्हों ने सब्र किया उस पर जो वह झुटलाए गए और सताए गए यहां तक कि उन पर हमारी मदद आगई, और (कोई) बदलने वाला नहीं अल्लाह की बातों को, और अलबत्ता आप (स) के पास रसूलों की कुछ ख़बरें पहुँच चुकी हैं। (34)

وَاِنْ كَانَ كَبُرَ عَلَيْكَ اِعْرَاضُهُمْ فَاِنِ اسْتَطَعْتَ اَنْ تَبْتَغِيَ

ढूंड लो	कि	तुम से हो सके	तो अगर	उन का मुँह फेरना	आप (स) पर	गरां	है	और अगर

نَفَقًا فِي الْاَرْضِ اَوْ سُلَّمًا فِي السَّمَآءِ فَتَاْتِيَهُمْ بِاٰيَةٍ ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ

चाहता अल्लाह	और अगर	कोई निशानी	फिर ले आओ उन के पास	आस्मान में	कोई सीढ़ी	या	ज़मीन में	कोई सुरंग

النصف

لَجَمَعَهُمْ عَلَى الْهُدٰى فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْجٰهِلِيْنَ ﴿٣٥﴾ اِنَّمَا يَسْتَجِيْبُ

मानते हैं	सिर्फ़ वह	35	बे ख़बर (जमा)	से	सो आप (स) न हों	हिदायत पर	तो उन्हें जमा कर देता

وقف منزل
وقف غفران

الَّذِيْنَ يَسْمَعُوْنَ ؕ وَالْمَوْتٰى يَبْعَثُهُمُ اللّٰهُ ثُمَّ اِلَيْهِ يُرْجَعُوْنَ ﴿٣٦﴾

36	वह लौटाए जाएंगे	उस की तरफ़	फिर	उन्हें उठाएगा अल्लाह	और मुर्दे	सुनते हैं	जो लोग

وَقَالُوْا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ قُلْ اِنَّ اللّٰهَ قَادِرٌ عَلٰٓى اَنْ

कि	पर	क़ादिर	बेशक अल्लाह	आप (स) कह दें	उस का रब	से	कोई निशानी	उस पर	क्यों नहीं उतारी गई	और वह कहते हैं

يُّنَزِّلَ اٰيَةً وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٧﴾ وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِي الْاَرْضِ

ज़मीन में	चलने वाला	कोई	और नहीं	37	नहीं जानते	उन में अक्सर	और लेकिन	निशानी	उतारे

وَلَا طٰٓئِرٍ يَّطِيْرُ بِجَنَاحَيْهِ اِلَّآ اُمَمٌ اَمْثَالُكُمْ ؕ مَا فَرَّطْنَا

नहीं छोड़ी हम ने	तुम्हारी तरह	उम्मतें (जमाअ़तें)	मगर	अपने परों से	उड़ता है	परिन्दा	और न

فِي الْكِتٰبِ مِنْ شَيْءٍ ثُمَّ اِلٰى رَبِّهِمْ يُحْشَرُوْنَ ﴿٣٨﴾ وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا

उन्हों ने झुटलाया	और वह लोग जो कि	38	जमा किए जाएंगे	अपना रब	तरफ़	फिर	चीज़	कोई	किताब में

بِاٰيٰتِنَا صُمٌّ وَّبُكْمٌ فِي الظُّلُمٰتِ ؕ مَنْ يَّشَاِ اللّٰهُ يُضْلِلْهُ ؕ وَمَنْ يَّشَاْ

और जिसे चाहे	उसे गुमराह कर दे	अल्लाह चाहे	जो-जिस	अन्धेरे	में	और गूंगे	बहरे	हमारी आयात

يَجْعَلْهُ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٣٩﴾ قُلْ اَرَءَيْتَكُمْ اِنْ اَتٰىكُمْ عَذَابُ

अ़ज़ाब	तुम पर आए	अगर	भला देखो	आप (स) कह दें	39	सीधा	रास्ता	पर	उसे कर दे (चला दे)

اللّٰهِ اَوْ اَتَتْكُمُ السَّاعَةُ اَغَيْرَ اللّٰهِ تَدْعُوْنَ ۚ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٤٠﴾

40	सच्चे	तुम हो	अगर	तुम पुकारोगे	क्या अल्लाह के सिवा	क़ियामत	या आए तुम पर	अल्लाह

بَلْ اِيَّاهُ تَدْعُوْنَ فَيَكْشِفُ مَا تَدْعُوْنَ اِلَيْهِ اِنْ شَآءَ وَتَنْسَوْنَ

और तुम भूल जाते हो	वह चाहे	अगर	उस के लिए	जिसे पुकारते हो	पस खोल देता है (दूर करदेता है)	तुम पुकारते हो	उसी को	बल्कि

ع ١١ ١٠

مَا تُشْرِكُوْنَ ﴿٤١﴾ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَآ اِلٰٓى اُمَمٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَاَخَذْنٰهُمْ بِالْبَاْسَآءِ

सख़्ती में	पस हम ने उन्हें पकड़ा	तुम से पहले	उम्मतें	तरफ़	और तहक़ीक़ हम ने भेजे (रसूल)	41	तुम शरीक करते हो	जो-जिस

وَالضَّرَّآءِ لَعَلَّهُمْ يَتَضَرَّعُوْنَ ﴿٤٢﴾ فَلَوْلَآ اِذْ جَآءَهُمْ بَاْسُنَا تَضَرَّعُوْا

वह गिड़गिड़ाए	हमारा अ़ज़ाब	आया उन पर	जब	फिर क्यों न	42	गिड़गिड़ाएं	ताकि वह	और तक्लीफ़

وَلٰكِنْ قَسَتْ قُلُوْبُهُمْ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٤٣﴾

43	वह करते थे	जो	शैतान	उन को	आरास्ता कर दिखाया	दिल उन के	सख़्त हो गए	और लेकिन

और अगर आप (स) पर गरां है उन का मुँह फेरना तो अगर तुम से हो सके तो ज़मीन में कोई सुरंग या आस्मान में कोई सीढ़ी ढूंड निकालो फिर तुम उन के पास कोई निशानी ले आओ, और अगर अल्लाह चाहता तो उन्हें हिदायत पर जमा कर देता, सो आप (स) बे ख़बरों में से न हों। (35)

मानते सिर्फ़ वह हैं जो सुनते हैं, और मुर्दों को अल्लाह उठाएगा (दोबारा ज़िन्दा करेगा) फिर वह उस की तरफ़ लौटाए जाएंगे। (36)

और वह कहते हैं कि उस पर उस के रब की तरफ़ से कोई निशानी क्यों नहीं उतारी गई? आप (स) कह दें बेशक अल्लाह उस पर क़ादिर है कि वह उतारे निशानी, लेकीन उन में अक्सर नहीं जानते। (37)

और ज़मीन में कोई चलने वाला (हैवान) नहीं और न कोई परिन्दा जो अपने परों से उड़ता है मगर (उन की भी) तुम्हारी तरह जमाअ़तें हैं, हम ने किताब में कोई चीज़ नहीं छोड़ी, फिर अपने रब की तरफ़ जमा किए जाएंगे। (38)

और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुटलाया वह बहरे और गूंगे हैं, अन्धेरों में हैं, जिस को अल्लाह चाहे गुमराह कर दे, और जिस को चाहे सीधे रास्ते पर चलादे। (39)

आप (स) कह दें भला देखो अगर तुम पर अल्लाह का अ़ज़ाब आय या तुम पर क़ियामत आजाए, क्या तुम अल्लाह के सिवा (किसी और को) पुकारोगे? अगर तुम सच्चे हो। (40)

बल्कि तुम उसी को पुकारते हो, पस जिस (दुख) के लिए उसे पुकारते हो अगर वह चाहे तो वह उसे दूर कर देता है, और तुम भूल जाते हो जिस को तुम शरीक करते हो। (41)

तहक़ीक़ हम ने तुम से पहली उम्मतों की तरफ़ रसूल भेजे फिर हम ने (उन की नाफ़रमानी के सबब) उन्हें पकड़ा सख़्ती और तक्लीफ़ में ताकि वह गिड़गिड़ाएं। (42)

फिर जब उन पर हमारा अ़ज़ाब आया वह क्यों न गिड़गिड़ाए लेकिन उन के दिल सख़्त हो गए और जो वह करते थे शैतान ने उन को आरास्ता कर दिखाया। (43)

فَلَمَّا نَسُوْا مَا ذُكِّرُوْا بِهٖ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ اَبْوَابَ كُلِّ شَيْءٍ ؕ

हर चीज़	दरवाज़े	उन पर	तो हम ने खोल दिए	उस के साथ	जो नसीहत की गई	वह भूल गए	फिर जब

حَتّٰۤى اِذَا فَرِحُوْا بِمَاۤ اُوْتُوْۤا اَخَذْنٰهُمْ بَغْتَةً فَاِذَا هُمْ

वह	पस उस वक़्त	अचानक	हम ने पकड़ा उन को	उन्हें दी गई	उस से जो	खुश हो गए	जब	यहां तक कि

مُّبْلِسُوْنَ ﴿٤٤﴾ فَقُطِعَ دَابِرُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ؕ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ

और हर तारीफ़ अल्लाह के लिए	जिन लोगों ने ज़ुल्म किया (ज़ालिम)	क़ौम	जड़	फिर काट दी गई	44	मायूस रह गए

رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٤٥﴾ قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَخَذَ اللّٰهُ سَمْعَكُمْ

तुम्हारे कान	ले (छीन ले) अल्लाह	अगर	भला तुम देखो	आप (स) कह दें	45	सारे जहानों का रब

وَاَبْصَارَكُمْ وَخَتَمَ عَلٰى قُلُوْبِكُمْ مَّنْ اِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ يَاْتِيْكُمْ بِهٖ ؕ اُنْظُرْ

देखो	यह	तुम को लादे	अल्लाह	सिवाए	माबूद	कौन	तुम्हारे दिल	पर	और मुहर लगा दे	और तुम्हारी आँखें

كَيْفَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ ثُمَّ هُمْ يَصْدِفُوْنَ ﴿٤٦﴾ قُلْ اَرَءَيْتَكُمْ اِنْ

अगर	तुम देखो तो सही	आप (स) कह दें	46	किनारा करते हैं	वह	फिर	आयतें	बदल बदल कर बयान करते हैं	कैसे

اَتٰىكُمْ عَذَابُ اللّٰهِ بَغْتَةً اَوْ جَهْرَةً هَلْ يُهْلَكُ اِلَّا الْقَوْمُ

लोग	सिवाए	हलाक होगा	क्या	या खुल्लम खुल्ला	अचानक	अ़ज़ाब अल्लाह का	तुम पर आए

الظّٰلِمُوْنَ ﴿٤٧﴾ وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِيْنَ اِلَّا مُبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ

और डर सुनाने वाले	ख़ुशख़बरी देने वाले	मगर	रसूल (जमा)	और नहीं भेजते हम	47	ज़ालिम (जमा)

فَمَنْ اٰمَنَ وَاَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٤٨﴾

48	ग़मग़ीन होंगे	और न वह	उन पर	तो कोई ख़ौफ़ नहीं	और संवर गया	ईमान लाया	पस जो

وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا يَمَسُّهُمُ الْعَذَابُ بِمَا

इस लिए कि	अ़ज़ाब	उन्हें पहुँचे गा	हमारी आयतों को	उन्हों ने झुटलाया	और वह लोग जो

كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ﴿٤٩﴾ قُلْ لَّاۤ اَقُوْلُ لَكُمْ عِنْدِيْ خَزَآئِنُ اللّٰهِ وَلَاۤ اَعْلَمُ

मैं जानता	और नहीं	अल्लाह के ख़ज़ाने	मेरे पास	तुम से	नहीं कहता मैं	आप कह दें	49	वह करते थे नाफ़रमानी

الْغَيْبَ وَلَاۤ اَقُوْلُ لَكُمْ اِنِّيْ مَلَكٌ ۚ اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰۤى اِلَيَّ ؕ

मेरी तरफ़	जो वहि किया जाता है	मगर	मैं नहीं पैरवी करता	फ़रिश्ता	कि मैं	तुम से	और नहीं कहता मैं	ग़ैब

قُلْ هَلْ يَسْتَوِى الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ ؕ اَفَلَا تَتَفَكَّرُوْنَ ﴿٥٠﴾ ع ٥ ٩ ١١

50	सो क्या तुम ग़ौर नहीं करते	और बीना	नाबीना	बराबर है	क्या	आप कह दें

وَاَنْذِرْ بِهِ الَّذِيْنَ يَخَافُوْنَ اَنْ يُّحْشَرُوْۤا اِلٰى رَبِّهِمْ لَيْسَ

नहीं	अपना रब	तरफ़ (सामने)	वह जमा किए जाएंगे	कि	खौफ़ रखते हैं	वह लोग जो	उस से	और डरावें

لَهُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ وَلِيٌّ وَّلَا شَفِيْعٌ لَّعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ﴿٥١﴾

51	बचते रहें	ताकि वह	सिफ़ारिश करने वाला	और न	कोई हिमायती	उस के सिवा	कोई	उन के लिए

फिर जब वह भूल गए वह नसीहत जो उन्हें की गई तो हम ने उन पर हर चीज़ के दरवाज़े खोल दिए यहां तक कि जब वह उस से खुश हो गए जो उन्हें दी गई तो हम ने उन को अचानक पकड़ा (धर लिया) पस उस वक़्त वह मायूस हो कर रह गए। (44)

फिर ज़ालिम क़ौम की जड़ काट दी गई, और हर तारीफ़ अल्लाह के लिए है जो सारे जहानों का रब है। (45)

आप (स) कह दें भला देखो, अगर अल्लाह तुम्हारे कान और तुम्हारी आँखें छीन ले और तुम्हारे दिलों पर मुहर लगादे तो अल्लाह के सिवा कौन माबूद है जो तुम को यह चीज़ें ला दे (वापस करदे), देखो हम कैसे बदल बदल कर आयतें बयान करते हैं फिर वह किनारा करते हैं। (46)

आप (स) कह दें देखो तो सही अगर तुम पर अल्लाह का अ़ज़ाब अचानक या खुल्लम खुल्ला आए क्या ज़ालिम लोगों के सिवा (और कोई) हलाक होगा? (47)

और हम रसूल नहीं भेजते मगर ख़ुशख़बरी देने वाले और डर सुनाने वाले। पस जो ईमान लाया और संवर गया तो उन पर कोई ख़ौफ़ नहीं और न वह ग़मग़ीन होंगे। (48)

और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुटलाया उन्हें अ़ज़ाब पहुँचेगा इस लिए कि वह नाफ़रमानी करते थे। (49)

आप (स) कह दें, मैं नहीं कहता तुम से कि मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं और न मैं ग़ैब को जानता हूँ, और न मैं तुम से कहता हूँ कि मैं फ़रिश्ता हूँ, मैं पैरवी नहीं करता मगर (सिर्फ़ उस की) जो मेरी तरफ़ वहि किया जाता है, आप (स) कह दें क्या नाबीना और बीना बराबर हो सकते हैं? सो क्या तुम ग़ौर नहीं करते? (50)

और उस से उन लोगों को डरावें जो खौफ़ रखते हैं कि अपने रब के सामने जमा किए जाएंगे, उस के सिवा उन का न होगा कोई हिमायती और न कोई सिफ़ारिश करने वाला, ताकि वह बचते रहें। (51)

وَلَا تَطْرُدِ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِيِّ

और शाम	सुबह	अपना रब	पुकारते हैं	वह लोग जो	और दूर न करें आप

يُرِيْدُوْنَ وَجْهَهٗ ؕ مَا عَلَيْكَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ

कुछ	उन का हिसाब	से	आप (स) पर	नहीं	उस का रुख़ (रज़ा)	वह चाहते हैं

وَّمَا مِنْ حِسَابِكَ عَلَيْهِمْ مِّنْ شَيْءٍ فَتَطْرُدَهُمْ فَتَكُوْنَ مِنَ

से	तो हो जाओगे	कि तुम उन्हें दूर करोगे	कुछ	उन पर	आप (स) का हिसाब	से	और नहीं

الظّٰلِمِيْنَ ﴿٥٢﴾ وَكَذٰلِكَ فَتَنَّا بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لِّيَقُوْلُوْٓا اَهٰٓؤُلَآءِ

क्या यही हैं	ताकि वह कहें	बाज़ से	उन के बाज़	आज़माया हम ने	और इसी तरह	52	ज़ालिम (जमा)

مَنَّ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنْۢ بَيْنِنَا ؕ اَلَيْسَ اللّٰهُ بِاَعْلَمَ بِالشّٰكِرِيْنَ ﴿٥٣﴾

53	शुक्र गुज़ार (जमा)	खूब जानने वाला	क्या नहीं अल्लाह	हमारे दरमियान से	उन पर	अल्लाह ने फ़ज़्ल किया

وَاِذَا جَآءَكَ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِاٰيٰتِنَا فَقُلْ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ كَتَبَ

लिख ली	तुम पर	सलाम	तो कह दें	हमारी आयतों पर	ईमान रखते हैं	वह लोग	आप के पास आएं	और जब

رَبُّكُمْ عَلٰى نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ ۙ اَنَّهٗ مَنْ عَمِلَ مِنْكُمْ سُوْٓءًۢا بِجَهَالَةٍ

नादानी से	कोई बुराई	तुम से	करे	जो	कि	रहमत	अपनी ज़ात	पर	तुम्हारा रब

ثُمَّ تَابَ مِنْۢ بَعْدِهٖ وَاَصْلَحَ ۙ فَاَنَّهٗ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٥٤﴾ وَكَذٰلِكَ نُفَصِّلُ

और इसी तरह हम तफ़सील से बयान करते हैं	54	मेहरबान	बख़्शने वाला	तो बेशक अल्लाह	और नेक हो जाए	उस के बाद	तौबा कर ले	फिर

ع ٥ ٦ ١٢
الْاٰيٰتِ وَلِتَسْتَبِيْنَ سَبِيْلُ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿٥٥﴾ قُلْ اِنِّيْ

बेशक मैं	कह दें	55	गुनाहगार (जमा)	रास्ता - तरीक़ा	और ताकि ज़ाहिर हो जाए	आयतें

نُهِيْتُ اَنْ اَعْبُدَ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ قُلْ

कह दें	अल्लाह के सिवा	से	तुम पुकारते हो	वह जिन्हें	कि मैं बन्दगी करूं	मुझे रोका गया है

لَّآ اَتَّبِعُ اَهْوَآءَكُمْ ۙ قَدْ ضَلَلْتُ اِذًا وَّمَآ اَنَا مِنَ الْمُهْتَدِيْنَ ﴿٥٦﴾

56	हिदायत पाने वाले	से	और मैं नहीं	उस सूरत में	बेशक मैं बहक जाऊँगा	तुम्हारी ख़्वाहिशात	मैं पैरवी नहीं करता

قُلْ اِنِّيْ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّيْ وَكَذَّبْتُمْ بِهٖ ؕ مَا عِنْدِيْ مَا

जिस	नहीं मेरे पास	उस को	और तुम झुटलाते हो	अपना रब	से	रौशन दलील	पर	बेशक मैं	आप कह दें

تَسْتَعْجِلُوْنَ بِهٖ ؕ اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِ ؕ يَقُصُّ الْحَقَّ وَهُوَ

और वह	हक़	बयान करता है	सिर्फ़ अल्लाह के लिए	हुक्म	मगर	उस की	तुम जल्दी कर रहे हो

خَيْرُ الْفٰصِلِيْنَ ﴿٥٧﴾ قُلْ لَّوْ اَنَّ عِنْدِيْ مَا تَسْتَعْجِلُوْنَ بِهٖ

उस की	तुम जल्दी करते हो	जो	मेरे पास	होती	अगर	कह दें	57	फ़ैसला करने वाला	बेहतर

لَقُضِيَ الْاَمْرُ بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِالظّٰلِمِيْنَ ﴿٥٨﴾

58	ज़ालिमों को	खूब जानने वाला	और अल्लाह	और तुम्हारे दरमियान	मेरे दरमियान	फ़ैसला	अलबत्ता हो चुका होता

और आप (स) उन लोगों को दूर न करें जो अपने रब को पुकारते हैं सुबह और शाम, वह उस की रज़ा चाहते हैं और आप (स) पर (आप (स) के ज़िम्मे) उन के हिसाब में से कुछ नहीं, और न आप (स) के हिसाब में से उन पर कुछ है। अगर उन्हें दूर करोगे तो ज़ालिमों से हो जाओगे। (52)

और इसी तरह हम ने उन में से बाज़ को बाज़ से आज़माया ताकि वह कहें क्या यही लोग हैं जिन पर अल्लाह ने फ़ज़्ल किया हम में से? क्या अल्लाह शुक्र गुज़ारों को खूब जानने वाला नहीं? (53)

और जब आप (स) के पास वह लोग आएं जो हमारी आयतों पर ईमान रखते हैं तो आप (स) कह दें तुम पर सलाम है, तुम्हारे रब ने अपने आप पर रहमत लिख ली (लाज़िम कर ली) है कि तुम में जो कोई बुराई करे नादानी से फिर उस के बाद तौबा कर ले और नेक हो जाए तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है। (54)

और इसी तरह हम तफ़सील से बयान करते हैं आयतें और (यह इस लिए कि) गुनाहगारों का तरीक़ा ज़ाहिर हो जाए। (55)

आप कह दें मुझे (इस बात से) रोका गया है कि मैं उन की बन्दगी करूं जिन्हें तुम पुकारते हो अल्लाह के सिवा, आप कह दें मैं तुम्हारी ख़्वाहिशात की पैरवी नहीं करता, उस सूरत में बेशक मैं बहक जाऊँगा और हिदायत पाने वालों में से न हों गा। (56)

आप (स) कह दें बेशक मैं अपने रब की तरफ़ से रौशन दलील पर हूँ और तुम उस को झुटलाते हो, तुम जिस (अ़ज़ाब) की जल्दी कर रहे हो मेरे पास नहीं। हुक्म सिर्फ़ अल्लाह के लिए है, वह हक़ बयान करता है और वह सब से बेहतर फ़ैसला करने वाला है। (57)

आप (स) कह दें अगर मेरे पास होती (वह चीज़) जिस की तुम जल्दी करते हो तो अलबत्ता मेरे और तुम्हारे दरमियान फ़ैसला हो चुका होता, और अल्लाह ज़ालिमों को खूब जानने वाला है। (58)

وَعِنْدَهٗ مَفَاتِحُ الْغَيْبِ لَا يَعْلَمُهَآ اِلَّا هُوَ ؕ وَيَعْلَمُ مَا فِى الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ؕ

और तरी	ख़ुश्की में	जो	और जानता है	वह	सिवा	उन को जानता	नहीं	ग़ैब	कुनजियां	और उस के पास

وَمَا تَسْقُطُ مِنْ وَّرَقَةٍ اِلَّا يَعْلَمُهَا وَلَا حَبَّةٍ فِىْ ظُلُمٰتِ الْاَرْضِ وَلَا رَطْبٍ

और न कोई तर	ज़मीन	अन्धेरे	में	और न कोई दाना	वह उस को जानता है	मगर	पत्ता	कोई	गिरता	और नहीं

وَّلَا يَابِسٍ اِلَّا فِىْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ﴿٥٩﴾ وَهُوَ الَّذِىْ يَتَوَفّٰكُمْ بِالَّيْلِ

रात में	क़ब्ज़ कर लेता है तुम्हारी (रूह)	जो कि	और वह	59	रौशन	किताब	में	मगर	ख़ुश्क	और न

وَيَعْلَمُ مَا جَرَحْتُمْ بِالنَّهَارِ ثُمَّ يَبْعَثُكُمْ فِيْهِ لِيُقْضٰٓى اَجَلٌ مُّسَمًّى ۚ

मुक़र्ररा	मुद्दत	ताकि पूरी हो	उस में	तुम्हें उठाता है	फिर	दिन में	जो तुम कमा चुके हो		और जानता है

ثُمَّ اِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ ثُمَّ يُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٦٠﴾ وَهُوَ الْقَاهِرُ ع ١٣

ग़ालिब	और वही	60	तुम करते थे	जो	तुम्हें जता देगा	फिर	तुम्हारा लौटना	उस की तरफ़	फिर

فَوْقَ عِبَادِهٖ وَيُرْسِلُ عَلَيْكُمْ حَفَظَةً ؕ حَتّٰٓى اِذَا جَآءَ اَحَدَكُمُ

तुम में से एक-किसी	आ पहुँचे	जब	यहाँ तक के	निगेहबान	तुम पर	और भेजता है	अपने बन्दे	पर

الْمَوْتُ تَوَفَّتْهُ رُسُلُنَا وَهُمْ لَا يُفَرِّطُوْنَ ﴿٦١﴾ ثُمَّ رُدُّوْٓا اِلَى اللّٰهِ

अल्लाह की तरफ़	लौटाए जाएंगें	फिर	61	नहीं करते कोताही	और वह	हमारे भेजे हुए (फ़रिश्ते)	क़ब्ज़े में लेते हैं उस को	मौत

مَوْلٰىهُمُ الْحَقِّ ؕ اَلَا لَهُ الْحُكْمُ ۖ وَهُوَ اَسْرَعُ الْحٰسِبِيْنَ ﴿٦٢﴾ قُلْ مَنْ

कौन	आप कह दें	62	हिसाब लेने वाला	बहुत तेज़	और वह	हुक्म	उसी का	सुन रखो	सच्चा	उन का मौला

يُّنَجِّيْكُمْ مِّنْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ تَدْعُوْنَهٗ تَضَرُّعًا وَّخُفْيَةً ۚ لَئِنْ

कि अगर	और चुपके से	गिड़गिड़ा कर	तुम पुकारते हो उस को	और दर्या	ख़ुश्की	अन्धेरे	से	बचाता है तुम्हें

اَنْجٰىنَا مِنْ هٰذِهٖ لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿٦٣﴾ قُلِ اللّٰهُ يُنَجِّيْكُمْ

तुम्हें बचाता है	अल्लाह	आप (स) कह दें	63	शुक्र अदा करने वाले	से	तो हम हों	इस	से	हमें बचा ले

مِّنْهَا وَمِنْ كُلِّ كَرْبٍ ثُمَّ اَنْتُمْ تُشْرِكُوْنَ ﴿٦٤﴾ قُلْ هُوَ الْقَادِرُ عَلٰٓى

पर	क़ादिर	वह	आप कह दें	64	शिर्क करते हो	तुम	फिर	हर सख़्ती	और से	उस से

اَنْ يَّبْعَثَ عَلَيْكُمْ عَذَابًا مِّنْ فَوْقِكُمْ اَوْ مِنْ تَحْتِ اَرْجُلِكُمْ

तुम्हारे पाऊँ	नीचे	से	या	तुम्हारे ऊपर	से	अ़ज़ाब	तुम पर	भेजे	कि

اَوْ يَلْبِسَكُمْ شِيَعًا وَّيُذِيْقَ بَعْضَكُمْ بَاْسَ بَعْضٍ ؕ اُنْظُرْ كَيْفَ نُصَرِّفُ

हम फेर फेर कर बयान करते हैं	किस तरह	देखो	दूसरा	लड़ाई	तुम में से एक	और चखाए	फ़िर्क़ा - फ़िर्क़ा	या भिड़ा दे तुम्हें

الْاٰيٰتِ لَعَلَّهُمْ يَفْقَهُوْنَ ﴿٦٥﴾ وَكَذَّبَ بِهٖ قَوْمُكَ وَهُوَ الْحَقُّ ؕ قُلْ

आप कह दें	हक़	हालांकि वह	तुम्हारी क़ौम	उस को	और झुटलाया	65	समझ जाएं	ताकि वह	आयात

لَّسْتُ عَلَيْكُمْ بِوَكِيْلٍ ﴿٦٦﴾ لِكُلِّ نَبَاٍ مُّسْتَقَرٌّ ۙ وَّسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿٦٧﴾

67	तुम जान लोगे	और जल्द	एक ठिकाना	ख़बर	हर एक के लिए	66	दारोग़ा	तुम पर	मैं नहीं

और उस के पास ग़ैब की कुनजियां हैं, उन को उस के सिवा कोई नहीं जानता, वह जानता है जो ख़ुश्की और तरी में है, और नहीं गिरता कोई पत्ता मगर वह उस को जानता है और कोई दाना नहीं ज़मीन के अन्धेरों में, और न कोई तर न कोई ख़ुश्क, मगर सब रौशन किताब (लौहे महफ़ूज़) में है। (59)

और वही तो है जो रात मे तुम्हारी (रूह) क़ब्ज़ कर लेता है और जानता है जो तुम दिन में कमा चुके हो, फिर तुम्हें उस (दिन) में उठाता है ताकि मुद्दत मुक़र्ररा पूरी हो, फिर तुम्हें उसी की तरफ़ लौटना है, फिर तुम्हें जता देगा जो तुम करते थ। (60)

और वही अपने बन्दों पर ग़ालिब है, और तुम पर निगेहबान भेजता है यहां तक कि जब तुम में से किसी को मौत आ पहुँचे तो हमारे फ़रिश्ते उस की (रूह) क़ब्ज़े में ले लेते हैं और वह कोताही नहीं करते। (61)

फिर लौटाए जाएंगें अपने सच्चे मौला की तरफ़, सुन रखो! हुक्म उसी का है और वह हिसाब लेने में बहुत तेज़ है। (62)

आप (स) कह दें तुम्हें ख़ुश्की और दर्या के अन्धेरों से कौन बचाता है? (उस वक़्त) तुम उस को गिड़गिड़ा कर और चुपके से पुकारते हो (और कहते हो) कि अगर हमें इस से बचाले तो हम शुक्र अदा करने वालों में से होंगे। (63)

आप (स) कह दें अल्लाह तुम्हें उस से बचाता है और हर सख़्ती से, फिर तुम शिर्क करते हो। (64)

आप (स) कह दें वह क़ादिर है कि तुम पर भेजे अ़ज़ाब तुम्हारे ऊपर से या तुम्हारे पाऊँ के नीचे से या तुम्हें फ़िर्क़ा-फ़िर्क़ा कर के भिड़ा दे, और तुम मे से एक को चखा दे दूसरे की लड़ाई (का मज़ा), देखो हम किस तरह आयात फेर फेर कर बयान करते हैं ताकि वह समझ जाएं। (65)

और तुम्हारी क़ौम ने उस को झुटलाया हालांकि वह हक़ है, आप (स) कह दें मैं तुम पर दारोग़ा नहीं। (66)

हर ख़बर के लिए एक ठिकाना (मक़र्ररा वक़्त) है और तुम जल्द जान लोगे। (67)

وَاِذَا رَاَيْتَ الَّذِيْنَ يَخُوْضُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِنَا فَاَعْرِضْ عَنْهُمْ حَتّٰى

यहां तक कि	उन से	तो किनारा कर ले	हमारी आयतें	में	झगड़ते हैं	वह लोग जो कि	तू देखे	और जब

يَخُوْضُوْا فِيْ حَدِيْثٍ غَيْرِهٖ ۖ وَاِمَّا يُنْسِيَنَّكَ الشَّيْطٰنُ فَلَا تَقْعُدْ

तो न बैठ	शैतान	भुलादे तुझे	और अगर	उस के अ़लावा	कोई बात	में	वह मशगूल हों

بَعْدَ الذِّكْرٰى مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٦٨﴾ وَمَا عَلَى الَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ

परहेज़ करते हैं	वह लोग जो	पर	और नहीं	68	ज़ालिम (जमा)	क़ौम (लोग)	साथ (पास)	याद आना	बाद

مِنْ حِسَابِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ وَّلٰكِنْ ذِكْرٰى لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ﴿٦٩﴾ وَذَرِ

और छोड़ दे	69	डरें	ताकि वह	नसीहत करना	लेकिन	चीज़	कोई	उन का हिसाब	से

الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَهُمْ لَعِبًا وَّلَهْوًا وَّغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا

दुनिया	ज़िन्दगी	और उन्हें धोके में डाल दिया	और तमाशा	खेल	अपना दीन	उन्हों ने बना लिया	वह लोग जो

وَذَكِّرْ بِهٖٓ اَنْ تُبْسَلَ نَفْسٌۢ بِمَا كَسَبَتْ ۖ لَيْسَ لَهَا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ

सिवाए अल्लाह	से	उस के लिए	नहीं	उस ने किया	बसबब जो	कोई	पकड़ा (न) जाए	ताकि	इस से	और नसीहत करो

وَلِيٌّ وَّلَا شَفِيْعٌ ۚ وَاِنْ تَعْدِلْ كُلَّ عَدْلٍ لَّا يُؤْخَذْ مِنْهَا ۗ اُولٰٓئِكَ

यही लोग	उस से	न लिए जाएं	मुआ़वज़े	तमाम	बदले में दे	और अगर	कोई सिफ़ारिश करने वाला	और न	कोई हिमायती

الَّذِيْنَ اُبْسِلُوْا بِمَا كَسَبُوْا ۚ لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ حَمِيْمٍ وَّعَذَابٌ

और अ़ज़ाब	गर्म	से	पीना (पानी)	उन के लिए	जो उन्हों ने कमाया (अपना किया)	पकड़े गए	वह लोग जो

ع ٨ ١٠ ١٢ اَلِيْمٌۢ بِمَا كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ ﴿٧٠﴾ قُلْ اَنَدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا

जो	सिवाए अल्लाह	से	क्या हम पुकारें	कह दें	70	वह कुफ़्र करते थे	इस लिए कि	दर्दनाक

لَا يَنْفَعُنَا وَلَا يَضُرُّنَا وَنُرَدُّ عَلٰٓى اَعْقَابِنَا بَعْدَ اِذْ هَدٰىنَا اللّٰهُ

अल्लाह	जब हिदायत दी हमें	बाद	अपनी एड़ियां (उलटे पाऊँ)	पर	और हम फिर जाएं	और न नुक़्सान करे हमें	न हमें नफ़ा दे

كَالَّذِي اسْتَهْوَتْهُ الشَّيٰطِيْنُ فِي الْاَرْضِ حَيْرَانَ ۠ لَهٗٓ اَصْحٰبٌ

साथी	उस के	हैरान	ज़मीन	में	शैतान	भुला दिया उस को	उस की तरह जो

يَّدْعُوْنَهٗٓ اِلَى الْهُدَى ائْتِنَا ۗ قُلْ اِنَّ هُدَى اللّٰهِ هُوَ الْهُدٰى ۗ

हिदायत	वही	अल्लाह की हिदायत	बेशक	कह दें	हमारे पास आ	हिदायत	तरफ़	बुलाते हों उस को

وَاُمِرْنَا لِنُسْلِمَ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٧١﴾ وَاَنْ اَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ

नमाज़	क़ाइम करो	और यह कि	71	तमाम जहान	परवरदिगार के लिए	कि फ़रमांबरदार रहें	और हुक्म दिया गया हमें

وَاتَّقُوْهُ ۗ وَهُوَ الَّذِيْٓ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿٧٢﴾ وَهُوَ الَّذِيْ خَلَقَ

पैदा किया	वह जो-जिस	और वही	72	तुम इकटठे किए जाओगे	उस की तरफ़	वह जिस की	और वही	और उस से डरो

الثلثة السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ۗ وَيَوْمَ يَقُوْلُ كُنْ فَيَكُوْنُ ۚ

तो वह हो जाएगा	हो जा	कहेगा वह	और जिस दिन	ठीक तौर पर	और ज़मीन	आस्मान (जमा)

और जब तू उन लोगों को देखे जो हमारी आयतों में झगड़ते हैं तो उन से किनारा कर ले यहां तक कि वह मशगूल हो जाएं उस के अ़लावा किसी और बात में, और अगर तुझे शैतान भुलादे तो याद आने के बाद न बैठ ज़ालिम लोगों के पास। **(68)**

और जो लोग परहेज़ करते हैं (परहेज़गार हैं) उन पर उन (झगड़ने वालों) के हिसाब में से कोई चीज़ नहीं, लेकिन नसीहत करना ताकि वह डरें (बाज़ आजाएं)। **(69)**

और उन लोगों को छोड़ दें जिन्हों ने अपने दीन को खेल और तमाशा बना लिया है और दुनिया की ज़िन्दगी ने उन्हें धोके में डाल दिया है, और उस (क़ुरआन) से नसीहत करो ताकि कोई अपने किए (अपने अ़मल) से पकड़ा न जाए, उस के लिए नहीं अल्लाह के सिवा कोई हिमायती और न कोई सिफ़ारिश करने वाला, और अगर बदले में तमाम मुआ़वज़े दें तो उस से न लिए जाएं (क़ुबूल न हों), यही वह लोग हैं जो अपने किए पर पकड़े गए, उन्हें गर्म पानी पीना है और दर्दनाक अ़ज़ाब है इस लिए कि वह कुफ़्र करते थे। **(70)**

कह दें क्या हम अल्लाह के सिवा उस को पुकारें जो हमें न नफ़ा दे सके न हमारा नुक़्सान कर सके और (क्या) हम उलटे पाऊँ फिर जाएं उस के बाद जब कि अल्लाह ने हमें हिदायत दे दी उस शख़्स की तरह जिसे शैतान ने भुला दिया ज़मीन (जंगल) में, वह हैरान हो, उस के साथी उस को हिदायत की तरफ़ बुलाते हों कि हमारे पास आ। आप (स) कह दें बेशक अल्लाह की हिदायत ही हिदायत है और हमें हुक्म दिया गया है कि तमाम जहानों के परवरदिगार के फ़रमांबरदार रहें। **(71)**

और यह कि नमाज़ क़ाइम करो और उस से डरो, और वही है जिस की तरफ़ तुम इकटठे किए जाओगे। **(72)**

और वही है जिस ने आस्मानों और ज़मीन को ठीक तौर पर पैदा किया। और जिस दिन कहेगा "हो जा" तो वह "हो जाएगा",

قَوْلُهُ الْحَقُّ ؕ وَلَهُ الْمُلْكُ يَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّوْرِ ؕ عٰلِمُ الْغَيْبِ

ग़ैब	जानने वाला	सूर	फूँका जाएगा	जिस दिन	मुल्क	और उस का	सच्ची	उस की बात

وَالشَّهَادَةِ ؕ وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ ﴿٧٣﴾ وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهِيْمُ لِاَبِيْهِ اٰزَرَ

आज़र	अपने बाप को	इब्राहीम (अ)	कहा	और जब	73	ख़बर रखने वाला	हिक्मत वाला	और वही	और ज़ाहिर

اَتَتَّخِذُ اَصْنَامًا اٰلِهَةً ۚ اِنِّيْٓ اَرٰىكَ وَقَوْمَكَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٧٤﴾

74	खुली	गुमराही में	और तेरी क़ौम	तुझे देखता हूँ	बेशक मैं	माबूद	बुत (जमा)	क्या तू बनाता है

وَكَذٰلِكَ نُرِيْٓ اِبْرٰهِيْمَ مَلَكُوْتَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلِيَكُوْنَ

और ताकि हो जाए वह	और ज़मीन	आस्मानों (जमा)	बादशाही	इब्राहीम (अ)	हम दिखाने लगे	और इसी तरह

مِنَ الْمُوْقِنِيْنَ ﴿٧٥﴾ فَلَمَّا جَنَّ عَلَيْهِ الَّيْلُ رَاٰ كَوْكَبًا ۚ قَالَ هٰذَا

यह	उस ने कहा	एक सितारा	उस ने देखा	रात	उस पर	अन्धेरा कर लिया	फिर जब	75	यक़ीन करने वाले	से

رَبِّيْ ۚ فَلَمَّآ اَفَلَ قَالَ لَآ اُحِبُّ الْاٰفِلِيْنَ ﴿٧٦﴾ فَلَمَّا رَاَ الْقَمَرَ بَازِغًا

चमकता हुआ	चाँद	फिर जब देखा	76	ग़ाइब होने वाले	मैं दोस्त रखता	नहीं	उस ने कहा	ग़ाइब हो गया	फिर जब	मेरा रब

قَالَ هٰذَا رَبِّيْ ۚ فَلَمَّآ اَفَلَ قَالَ لَئِنْ لَّمْ يَهْدِنِيْ رَبِّيْ لَاَكُوْنَنَّ

तो मैं हो जाऊँ	मेरा रब	न हिदायत दे मुझे	अगर	कहा	ग़ाइब होगया	फिर जब	मेरा रब	यह	बोले

مِنَ الْقَوْمِ الضَّآلِّيْنَ ﴿٧٧﴾ فَلَمَّا رَاَ الشَّمْسَ بَازِغَةً قَالَ هٰذَا رَبِّيْ

मेरा रब	यह	बोले	जगमगाता हुआ	सूरज	फिर जब उस ने देखा	77	भटकने वाले	क़ौम-लोग	से

هٰذَآ اَكْبَرُ ۚ فَلَمَّآ اَفَلَتْ قَالَ يٰقَوْمِ اِنِّيْ بَرِيْٓءٌ مِّمَّا تُشْرِكُوْنَ ﴿٧٨﴾

78	तुम शिर्क करते हो	उस से जो	बेज़ार	बेशक मैं	ऐ मेरी क़ौम	कहा	वह ग़ाइब हो गया	फिर जब	सब से बड़ा	यह

اِنِّيْ وَجَّهْتُ وَجْهِيَ لِلَّذِيْ فَطَرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ حَنِيْفًا وَّمَآ اَنَا

और नहीं मैं	यक रुख़ हो कर	और ज़मीन	आस्मान (जमा)	बनाए	उस की तरफ़ जिस	अपना मुँह	मैं ने मुँह मोड़ लिया	बेशक मैं

مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿٧٩﴾ وَحَآجَّهٗ قَوْمُهٗ ؕ قَالَ اَتُحَآجُّوْٓنِّيْ فِي اللّٰهِ

अल्लाह (के बारे) में	क्या तुम मुझ से झगड़ते हो	उस ने कहा	उस की क़ौम	और उस से झगड़ा किया	79	शिर्क करने वाले	से

وَقَدْ هَدٰىنِ ؕ وَلَآ اَخَافُ مَا تُشْرِكُوْنَ بِهٖٓ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ رَبِّيْ شَيْـًٔا ؕ

कुछ	मेरा रब	चाहे	यह कि	मगर	उस का	जो तुम शरीक करते हो	और नहीं डरता मैं	और उस ने मुझे हिदायत दे दी है

وَسِعَ رَبِّيْ كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ؕ اَفَلَا تَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٨٠﴾ وَكَيْفَ اَخَافُ

मैं डरूँ	और क्योंकर	80	सो क्या तुम नहीं सोचते	इल्म	हर चीज़	मेरा रब	अहाता कर लिया

مَآ اَشْرَكْتُمْ وَلَا تَخَافُوْنَ اَنَّكُمْ اَشْرَكْتُمْ بِاللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ عَلَيْكُمْ

तुम पर	उस की	नहीं उतारी	जो	अल्लाह का	शरीक करते हो	कि तुम	और तुम नहीं डरते	जो तुम शरीक करते हो (तुम्हारे शरीक)

سُلْطٰنًا ؕ فَاَيُّ الْفَرِيْقَيْنِ اَحَقُّ بِالْاَمْنِ ۚ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٨١﴾

81	जानते हो	तुम	अगर	अम्न का	ज़ियादा हक़दार	दोनों फ़रीक़	सो कौन	कोई दलील

وقف لازم

उस की बात सच्ची है, और मुल्क उसी का है, जिस दिन सूर फूँका जाएगा, ग़ैब और ज़ाहिर का जानने वाला, और वही है हिक्मत वाला, ख़बर रखने वाला। (73)

और जब इब्राहीम (अ) ने कहा अपने बाप आज़र को: क्या तू बुतों को माबूद बनाता है? बेशक मैं तुझे और तेरी क़ौम को खुली गुमराही में देखता हूँ। (74)

और इस तरह हम इब्राहीम (अ) को आस्मानों और ज़मीन की बादशाही (अ़जाइबात) दिखाने लगे ताकि वह यक़ीन करने वालों में से हो जाए। (75)

फिर जब उस पर रात अन्धेरा कर लिया तो एक सितारा देखा, कहा यह मेरा रब है। फिर जब ग़ाइब हो गया तो (इब्राहीम अ) कहने लगे मैं दोस्त नहीं रखता ग़ाइब होने वालों को। (76)

फिर जब चमकता हुआ चाँद देखा तो बोले यह मेरा रब है, फिर जब वह ग़ाइब हो गया तो कहा अगर मुझे हिदायत न दे मेरा रब तो मैं भटकने वाले लोगों में से हो जाऊँ। (77)

फिर जब उस ने जगमगाता हुआ सूरज देखा तो बोले यह मेरा रब है, यह सब से बड़ा है। फिर जब वह ग़ाइब हो गया तो कहा ऐ मेरी क़ौम! बेशक मैं उन से बेज़ार हूँ जिन को तुम शरीक करते हो। (78)

बेशक मैं ने अपना मुँह यक रुख़ हो कर उस की तरफ़ मोड़ लिया जिस ने ज़मीन और आस्मान बनाए और मैं शिर्क करने वालों से नहीं। (79)

और उस की क़ौम ने उस से झगड़ा किया तो उस ने कहा क्या तुम मुझ से अल्लाह (के बारे) में झगड़ते हो? उस ने मुझे हिदायत दे दी है और मैं उन से नहीं डरता जिन्हें तुम शरीक ठहराते हो उस का, मगर यह कि मेरा रब कुछ (तक्लीफ़) पहुँचाना चाहे, मेरे रब के इल्म ने हर चीज़ का अहाता कर लिया है, सो क्या तुम सोचते नहीं? (80)

और मैं तुम्हारे शरीक से क्योंकर डरूँ? और तुम (इस से) नहीं डरते कि अल्लाह का शरीक करते हो जिस की उस ने नहीं उतारी तुम पर कोई दलील, सो दोनों फ़रीक़ में से अम्न (दिलजमई) का कौन ज़ियादा हक़दार है? (बताओ) अगर तुम जानते हो। (81)

اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَمْ يَلْبِسُوْٓا اِيْمَانَهُمْ بِظُلْمٍ اُولٰٓئِكَ لَهُمُ الْاَمْنُ

अम्न (दिलजमई)	उन के लिए	यही लोग	ज़ुल्म से	अपना ईमान	और न मिलाया	ईमान लाए	जो लोग

٩ ع ١٣ ١٥ وَهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ﴿٨٢﴾ وَتِلْكَ حُجَّتُنَآ اٰتَيْنٰهَآ اِبْرٰهِيْمَ عَلٰى قَوْمِهٖ

उस की क़ौम	पर	इब्राहीम (अ)	हम ने यह दी	हमारी दलील	और यह	82	हिदायत याफ़्ता	और वही

نَرْفَعُ دَرَجٰتٍ مَّنْ نَّشَآءُ ۭ اِنَّ رَبَّكَ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ﴿٨٣﴾ وَوَهَبْنَا

और बख़्शा हम ने	83	जानने वाला	हिक्मत वाला	तुम्हारा रब	बेशक	हम चाहें	जो-जिस	दरजे	हम बुलन्द करते हैं

لَهٗٓ اِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ ۭ كُلًّا هَدَيْنَا ۚ وَنُوْحًا هَدَيْنَا مِنْ قَبْلُ

उस से क़ब्ल	हम ने हिदायत दी	और नूह (अ)	हिदायत दी हम ने	सब को	और याक़ूब (अ)	इस्हाक़ (अ)	उस को

وَمِنْ ذُرِّيَّتِهٖ دَاوٗدَ وَسُلَيْمٰنَ وَاَيُّوْبَ وَيُوْسُفَ وَمُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ۭ

और हारून (अ)	और मूसा (अ)	और यूसुफ़ (अ)	और अय्यूब (अ)	और सुलेमान (अ)	दाऊद (अ)	उन की औलाद	और से

وَكَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٨٤﴾ وَزَكَرِيَّا وَيَحْيٰى وَعِيْسٰى وَاِلْيَاسَ ۭ

और इलयास (अ)	और ईसा (अ)	और यहया (अ)	और ज़करिया (अ)	84	नेक काम करने वाले	हम बदला देते हैं	और इसी तरह

كُلٌّ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٨٥﴾ وَاِسْمٰعِيْلَ وَالْيَسَعَ وَيُوْنُسَ وَلُوْطًا ۭ

और लूत (अ)	और यूनुस (अ)	और अलयसअ़ (अ)	और इस्माईल (अ)	85	नेक बन्दे	से	सब

وَكُلًّا فَضَّلْنَا عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿٨٦﴾ وَمِنْ اٰبَآئِهِمْ وَذُرِّيّٰتِهِمْ

और उन की औलाद	उन के बाप दादा	और से (कुछ)	86	तमाम जहान वाले	पर	हम ने फ़ज़ीलत दी	और सब

وَاِخْوَانِهِمْ ۚ وَاجْتَبَيْنٰهُمْ وَهَدَيْنٰهُمْ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٨٧﴾

87	सीधा	रास्ता	तरफ़	हम ने हिदायत दी उन्हें	और हम ने चुना उन्हें	और उन के भाई

ذٰلِكَ هُدَى اللّٰهِ يَهْدِيْ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ۭ

अपने बन्दे	से	चाहे	जिसे	इस से	हिदायत देता है	अल्लाह की रहनुमाई	यह

وَلَوْ اَشْرَكُوْا لَحَبِطَ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٨٨﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ

वह लोग जो	यह	88	वह करते थे	जो कुछ	उन से	तो ज़ाया हो जाते	वह शिर्क करते	और अगर

اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ ۚ فَاِنْ يَّكْفُرْ بِهَا هٰٓؤُلَآءِ

यह लोग	इस का	इन्कार करें	पस अगर	और नबूव्वत	और शरीअ़त	किताब	हम ने दी उन्हें

فَقَدْ وَكَّلْنَا بِهَا قَوْمًا لَّيْسُوْا بِهَا بِكٰفِرِيْنَ ﴿٨٩﴾ اُولٰٓئِكَ

यही लोग	89	इन्कार करने वाले	इस के	वह नहीं	ऐसे लोग	इन के लिए	तो हम मुक़र्रर कर देते हैं

الَّذِيْنَ هَدَى اللّٰهُ فَبِهُدٰىهُمُ اقْتَدِهْ ۭ قُلْ لَّآ اَسْـَٔـلُكُمْ

नहीं मांगता मैं तुम से	आप (स) कह दें	चलो	सो उन की राह पर	अल्लाह ने हिदायत दी	वह जो

١٠ ع ٨ ١٦ عَلَيْهِ اَجْرًا ۭ اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٰى لِلْعٰلَمِيْنَ ﴿٩٠﴾

90	तमाम जहान वाले	नसीहत	मगर	यह	नहीं	कोई उज्रत	इस पर

जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने अपने ईमान को ज़ुल्म से न मिलाया, उन्हीं लोगों के लिए दिलजमई है और वही हिदायत याफ़्ता हैं। (82)

और यह हमारी दलील है जो हम ने इब्राहीम (अ) को उन की क़ौम पर दी, हम जिस के दरजे चाहें बुलन्द करते हैं। बेशक तुम्हारा रब हिक्मत वाला, जानने वाला। (83)

और हम ने उन (इब्राहीम अ) को बख़्शा इस्हाक़ (अ) और याक़ूब (अ), हम ने सब को हिदायत दी और नूह (अ) को हम ने हिदायत दी उस से क़ब्ल, और उन की औलाद में से दाऊद (अ) और सुलेमान (अ) और अय्यूब (अ) और यूसुफ़ (अ) और मूसा (अ) और हारून (अ) को, और इसी तरह हम नेक काम करने वालों को बदला देते हैं। (84)

और ज़करिया (अ) और यहया (अ) और ईसा (अ) और इलयास (अ), सब नेक बन्दों में से हैं। (85)

और इस्माईल (अ) और अलयसअ़ (अ) और युनुस (अ) और लूत (अ), और सब को हम ने तमाम जहान वालों पर फ़ज़ीलत दी। (86)

और कुछ उन के बाप दादा और उन की औलाद और उन के भाइयों को, और हम ने उन्हें चुना और सीधे रास्ते की तरफ़ हिदायत दी। (87)

यह अल्लाह की रहनुमाई है। वह इस से हिदायत देता है अपने बन्दों में से जिसे चाहे, और अगर वह शिर्क करते तो जो कुछ वह करते थे ज़ाया हो जाता। (88)

यह वह लोग हैं जिन्हें हम ने किताब दी और शरीअ़त और नबूव्वत दी, पस अगर यह लोग इस का इन्कार करें तो हम ने इन (बातों) के लिए मुक़र्रर कर दिए हैं ऐसे लोग जो इस के इन्कार करने वाले नहीं। (89)

यही वह लोग हैं जिन्हें अल्लाह ने हिदायत दी, सो उन की राह पर चलो, आप कह दें मैं उस पर तुम से कोई उज्रत नहीं मांगता, यह तो नहीं मगर नसीहत तमाम जहान वालों के लिए। (90)

وَمَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖٓ اِذْ قَالُوْا مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ عَلٰى بَشَرٍ

कोई इन्सान	पर	अल्लाह ने उतारी	नहीं	जब उन्हों ने कहा	उस की क़द्र	हक़	उन्हों ने अल्लाह की क़द्र जानी	और नहीं

مِّنْ شَىْءٍ ؕ قُلْ مَنْ اَنْزَلَ الْكِتٰبَ الَّذِىْ جَآءَ بِهٖ مُوْسٰى نُوْرًا

रौशनी	मूसा (अ)	लाए उस को	वह जो	किताब	उतारी	किस	आप (स) कह दें	कोई चीज़

وَّهُدًى لِّلنَّاسِ تَجْعَلُوْنَهٗ قَرَاطِيْسَ تُبْدُوْنَهَا وَتُخْفُوْنَ كَثِيْرًا ۚ

अक्सर	और तुम छुपाते हो	तुम ज़ाहिर करते हो उस को	वरक़ वरक़	तुम ने कर दिया उस को	लोगों के लिए	और हिदायत

وَعُلِّمْتُمْ مَّا لَمْ تَعْلَمُوْٓا اَنْتُمْ وَلَآ اٰبَآؤُكُمْ ؕ قُلِ اللّٰهُ ۙ ثُمَّ ذَرْهُمْ

उन्हें छोड़ दें	फिर	अल्लाह	आप कह दें	तुम्हारे बाप दादा	और न	तुम	तुम न जानते थे	जो	और सिखाया तुम्हें

فِىْ خَوْضِهِمْ يَلْعَبُوْنَ ﴿٩١﴾ وَهٰذَا كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ مُبٰرَكٌ مُّصَدِّقُ الَّذِىْ

जो	तस्दीक़ करने वाली	बरकत वाली	हम ने नाज़िल की	किताब	और यह	91	वह खेलते रहें	अपने बेहूदा शुग़ल	में

بَيْنَ يَدَيْهِ وَلِتُنْذِرَ اُمَّ الْقُرٰى وَمَنْ حَوْلَهَا ؕ وَالَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ

ईमान रखते हैं	और जो लोग	उस के इर्द गिर्द	और जो	अहले मक्का	और ताकि तुम डराओ	अपने से पहली (किताबें)

بِالْاٰخِرَةِ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَهُمْ عَلٰى صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ ﴿٩٢﴾ وَمَنْ

और कौन	92	हिफ़ाज़त करते हैं	अपनी नमाज़	पर (की)	और वह	इस पर	ईमान लाते हैं	आख़िरत पर

اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ قَالَ اُوْحِىَ اِلَىَّ وَلَمْ يُوْحَ

और नहीं वहि की गई	मेरी तरफ़	वहि की गई	कहे	या	झूट	अल्लाह पर	घड़े (बान्धे)	से-जो	बड़ा ज़ालिम

اِلَيْهِ شَىْءٌ وَّمَنْ قَالَ سَاُنْزِلُ مِثْلَ مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ ؕ وَلَوْ تَرٰٓى اِذِ

जब	तू देखे	और अगर	अल्लाह	जो नाज़िल किया	मिस्ल	मैं अभी उतारता हूँ	कहे	और जो	कुछ	उस की तरफ़

الظّٰلِمُوْنَ فِىْ غَمَرٰتِ الْمَوْتِ وَالْمَلٰٓئِكَةُ بَاسِطُوْٓا اَيْدِيْهِمْ ۚ اَخْرِجُوْٓا

निकालो	अपने हाथ	फैलाए हों	और फ़रिश्ते	मौत	सख़्तियों में	ज़ालिम (जमा)

اَنْفُسَكُمْ ؕ اَلْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُوْنِ بِمَا كُنْتُمْ تَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ

अल्लाह पर (के बारे में)	तुम कहते थे	बसबब	ज़िल्लत	अ़ज़ाब	आज तुम्हें बदला दिया जाएगा	अपनी जानें

غَيْرَ الْحَقِّ وَكُنْتُمْ عَنْ اٰيٰتِهٖ تَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٩٣﴾ وَلَقَدْ جِئْتُمُوْنَا

तुम आगए हमारे पास	और अलबत्ता	93	तकब्बुर करते	उस की आयतें	से	और तुम थे	झूट

فُرَادٰى كَمَا خَلَقْنٰكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّتَرَكْتُمْ مَّا خَوَّلْنٰكُمْ وَرَآءَ ظُهُوْرِكُمْ ۚ

अपनी पीठ	पीछे	हम ने दिया था तुम्हें	जो	और तुम छोड़ आए	बार	पहली	हम ने तुम्हें पैदा किया	जैसे	एक एक (अकेले)

وَمَا نَرٰى مَعَكُمْ شُفَعَآءَكُمُ الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ اَنَّهُمْ فِيْكُمْ شُرَكٰٓؤُا ؕ

साझी हैं	तुम में	कि वह	तुम गुमान करते थे	वह जो	सिफ़ारिश करने वाले तुम्हारे	तुम्हारे साथ	हम देखते	और नहीं

لَقَدْ تَّقَطَّعَ بَيْنَكُمْ وَضَلَّ عَنْكُمْ مَّا كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ﴿٩٤﴾ ع ١١ ١٧

94	तुम दावा करते थे	जो	तुम से	और जाते रहे	तुम्हारे दरमियान	अलबत्ता कट गया

और उन्हों ने अल्लाह की क़द्र न की (जैसे) उस की क़द्र का हक़ था जब उन्हों ने कहा कि अल्लाह ने किसी इन्सान पर कोई चीज़ नहीं उतारी, आप (स) कहें (वह) किताब किस ने उतारी जो मूसा (अ) ले कर आए लोगों के लिए रौशनी और हिदायत। तुम ने उसे वरक़ वरक़ कर दिया है, तुम उसे ज़ाहिर करते हो और अक्सर छुपा लेते हो, और उस ने तुम्हें सिखाया जो न तुम जानते थे और न तुम्हारे बाप दादा, आप (स) कह दें अल्लाह (ने नाज़िल की), फिर उन्हें छोड़ दें अपने बेहूदा शुग़ल में खेलते रहें। (91)

और यह (क़ुरआन) किताब है बरकत वाली, हम ने नाज़िल की, अपने से पहली (किताबों) की तस्दीक़ करने वाली ताकि तुम डराओ अहले मक्का को और जो उस के इर्द गिर्द हैं (तमाम आस पास वाले), और जो लोग आख़िरत पर ईमान रखते हैं वह उस पर ईमान लाते हैं और वह अपनी नमाज़ की हिफ़ाज़त करते हैं। (92)

और उस से बड़ा ज़ालिम कौन जो अल्लाह पर झूट (बुहतान) बान्धे, या कहे मेरी तरफ़ वहि की गई है और उसे कुछ वहि नहीं की गई, (उसी तरह वह) जो कहे मैं अभी उतारता हूँ उस के मिस्ल जो अल्लाह ने नाज़िल किया। और अगर तू देखे जब ज़ालिम मौत की सख़्तियों में हों और फ़रिश्ते अपने हाथ फैलाए हों कि अपनी जानें निकालो, आज तुम्हें ज़िल्लत का अ़ज़ाब दिया जाएगा उस सबब से कि तुम अल्लाह के बारे में झूटी बातें कहते थे और उस की आयतों से तकब्बुर करते थे। (93)

और अलबत्ता तुम हमारे पास अकेले अकेले आगए जैसे हम ने तुम्हें पहली बार पैदा किया था और जो हम ने तुम्हें (माल ओ असबाब) दिया था छोड़ आए अपनी पीठ पछि, और हम तुम्हारे साथ तुम्हारे वह सिफ़ारिश करने वाले नहीं देखते (जिन की निसबत) तुम गुमान करते थे कि वह तुम में (तुम्हारे) साझी हैं, अलबत्ता तुम्हारे दरमियान (रिश्ता) कट गया और तुम जो दावे करते थे सब जाते रहे। (94)

إِنَّ اللّٰهَ فٰلِقُ الْحَبِّ وَالنَّوٰى ؕ يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَمُخْرِجُ

और निकालने वाला	मुर्दा	से	ज़िन्दा	निकालता है	और गुठली	दाना	फाड़ने वाला	बेशक अल्लाह

الْمَيِّتِ مِنَ الْحَيِّ ؕ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ﴿٩٥﴾ فَالِقُ الْاِصْبَاحِ ۚ

चीर कर (चाक करके) निकालने वाला सुबह	95	तुम बहके जा रहे हो	पस कहां	यह है तुम्हारा अल्लाह	ज़िन्दा	से	मुर्दा

وَجَعَلَ الَّيْلَ سَكَنًا وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ حُسْبَانًا ؕ ذٰلِكَ تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ

ग़ालिब	अन्दाज़ा	यह	हिसाब	और चाँद	और सूरज	सुकून	रात	और उस ने बनाया

الْعَلِيْمِ ﴿٩٦﴾ وَهُوَ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ النُّجُوْمَ لِتَهْتَدُوْا بِهَا فِيْ

में	उन से	ताकि तुम रास्ता मालूम करो	सितारे	तुम्हारे लिए	बनाए	वह जिस	और वही	96	इल्म वाला

ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ؕ قَدْ فَصَّلْنَا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿٩٧﴾

97	इल्म रखते हैं	लोगों के लिए	बेशक हम ने खोल कर बयान कर दी हैं आयतें	और दर्या	ख़ुश्की	अन्धेरे

وَهُوَ الَّذِيْٓ اَنْشَاَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ فَمُسْتَقَرٌّ وَّمُسْتَوْدَعٌ ؕ

और अमानत की जगह	फिर एक ठिकाना	एक	वजूद-शख़्स	से	पैदा किया तुम्हें	वह जो-जिस	और वही

قَدْ فَصَّلْنَا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّفْقَهُوْنَ ﴿٩٨﴾ وَهُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ مِنَ

से	उतारा	वह जो-जिस	और वही	98	जो समझते हैं	लोगों के लिए	बेशक हम ने खोल कर बयान करदीं आयतें

السَّمَآءِ مَآءً ۚ فَاَخْرَجْنَا بِهٖ نَبَاتَ كُلِّ شَيْءٍ فَاَخْرَجْنَا مِنْهُ خَضِرًا

सबज़ी	उस से	फिर हम ने निकाली	हर चीज़	उगने वाली	उस से	फिर हम ने निकाली	पानी	आस्मान

نُّخْرِجُ مِنْهُ حَبًّا مُّتَرَاكِبًا ۚ وَمِنَ النَّخْلِ مِنْ طَلْعِهَا قِنْوَانٌ دَانِيَةٌ ۙ

झुके हुए	ख़ोशे	गाभा	से	खजूर	और	एक पर एक चढ़ा हुआ	दाने	उस से	हम निकालते हैं

وَّجَنّٰتٍ مِّنْ اَعْنَابٍ وَّالزَّيْتُوْنَ وَالرُّمَّانَ مُشْتَبِهًا وَّغَيْرَ مُتَشَابِهٍ ؕ

और नहीं भी मिलते	मिलते जुलते	और अनार	और ज़ैतून	अंगूर के	और बाग़ात

اُنْظُرُوْٓا اِلٰى ثَمَرِهٖٓ اِذَآ اَثْمَرَ وَيَنْعِهٖ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكُمْ

उस	में	बेशक	और उस का पकना	फलता है	जब	उस का फल	तरफ़	देखो

لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٩٩﴾ وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ شُرَكَآءَ الْجِنَّ وَخَلَقَهُمْ

हालांकि उस ने उन्हें पैदा किया	जिन	शरीक	अल्लाह का	और उन्हों ने ठहराया	99	ईमान रखते हैं	लोगों के लिए	निशानियां

١٢ ع ٦ ١٨ وَخَرَقُوْا لَهٗ بَنِيْنَ وَبَنٰتٍۢ بِغَيْرِ عِلْمٍ ؕ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿١٠٠﴾

100	वह बयान करते हैं	उस से जो	और बुलन्द तर	वह पाक है	इल्म के बग़ैर (जहालत से)	और बेटियां	बेटे	उस के लिए	और तराश्ते हैं

بَدِيْعُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ اَنّٰى يَكُوْنُ لَهٗ وَلَدٌ وَّلَمْ تَكُنْ لَّهٗ

उस की	जबकि नहीं	बेटा	उस का	हो सकता है	क्योंकर	और ज़मीन	आस्मान (जमा)	नई तरह बनाने वाला

صَاحِبَةٌ ؕ وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿١٠١﴾

101	जानने वाला	हर चीज़	और वह	हर चीज़	और उस ने पैदा की	बीवी

बेशक अल्लाह फाड़ने वाला दाने और गुठली का, वह मुर्दा से ज़िन्दा निकालता है और ज़िन्दा से मुर्दा निकालने वाला, यह है तुम्हारा अल्लाह, पस तुम कहां बहके जा रहे हो? **(95)**

(रात की तारीकी) चाक कर के सुबह निकालने वाला, और उस ने रात को (ज़रीआ) सुकून बनाया और सूरज और चाँद को (ज़रीआ) हिसाब, यह अन्दाज़ा है ग़ालिब, इल्म वाले का। **(96)**

वही है जिस ने तुम्हारे लिए सितारे बनाए ताकि तुम उन से ख़ुश्की और दर्या के अन्धेरों में रास्ते मालूम करो, बेशक हम ने आयतें खोल खोल कर बयान कर दी हैं उन लोगों के लिए जो इल्म रखते हैं। **(97)**

और वही है जिस ने तुम्हें एक वजूद से पैदा किया, फिर तुम्हारा एक ठिकाना है और अमानत रहने की जगह। बेशक हम ने आयात खोल कर बयान कर दी हैं समझ वालों के लिए। **(98)**

और वही है जिस ने आस्मानों से पानी उतारा, फिर हम ने उस से निकाली उगने वाली हर चीज़, फिर हम ने उस से हरे हरे केत और दरख़्त निकाले जिस से एक पर एक चढ़े हुए दाने निकालते हैं, और खजूरों के गाभे से झुके हुए ख़ोशे, और अंगूर और ज़ैतून और अनार के बाग़ात एक दूसरे से मिलते जुलते और नहीं भी मिलते, उस के फल की तरफ़ देखो जब वह फलता है और उस का पकना (देखो), बेशक उस में उन लोगों के लिए निशानियां हैं जो ईमान रखते हैं। **(99)**

और उन्हों ने जिन्नों को अल्लाह का शरीक ठहराया हालांकि उस ने उन्हें पैदा किया है और वह उस के लिए बेटे और बेटियां तराशते हैं जहालत से, वह पाक है और उस से बुलन्द तर है जो वह बयान करते हैं। **(100)**

नई तरह (नमूने के बग़ैर) आस्मानों और ज़मीन का बनाने वाला, उस के बेटा क्योंकर हो सकता है? जबकि उस की बीवी नहीं और उस ने हर चीज़ पैदा की है, और वह हर चीज़ का जानने वाला है। **(101)**

यही अल्लाह तुम्हारा रब है। उस के सिवा कोई माबूद नहीं, हर चीज़ का पैदा करने वाला, सो तुम उस की इबादत करो, और वह हर चीज़ का कारसाज़ और निगहबान है। (102)

(मख़्लूक़ की) आँखें उस को नहीं पा सकतीं और वह आँखों को पा सकता है और वह भेद जानने वाला ख़बरदार है। (103)

तुम्हारे रब की तरफ़ से निशानियां आ चुकीं। तो जिस ने देख लिया सो अपने वास्ते, और जो अन्धा रहा तो (उस का वबाल) उस की जान पर, और मैं तुम पर निगहबान नहीं। (104)

और उसी तरह हम आयतें फेर फेर कर बयान करते हैं ताकि वह कहें: तू ने (किसी से) पढ़ा है, और ताकि हम जानने वालों के लिए वाज़ेह कर दें। (105)

उस पर चलो जो वहि आए तुम्हारे रब से तुम्हारी तरफ़, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, और मुश्रिकों से मुँह फेर लो। (106)

अगर अल्लाह चाहता तो वह शिर्क न करते और हम ने तुम्हें उन पर निगहबान नहीं बनाया, और तुम उन पर दारोग़ा नहीं। (107)

और अल्लाह के सिवा वह जिन्हें पुकारते हैं तुम उन्हें गाली न दो, पस वह अल्लाह को बे समझे बूझे गुस्ताख़ी से बुरा कहेंगे, उसी तरह हम ने हर फ़िरक़े को उस का अ़मल भला दिखाया, फिर उन्हें अपने रब की तरफ़ लौटना है, वह फिर उन को जता देगा जो वह करते थे। (108)

और वह ताकीद से अल्लाह की क़सम खाते हैं कि अगर उन के पास कोई निशानी आए तो ज़रूर उस पर ईमान लाएंगे, आप (स) कह दें कि निशानियां तो अल्लाह के पास हैं, और तुम्हें क्या ख़बर कि जब आ भी जाएं तो यह ईमान न लाएंगे। (109)

और हम उन के दिल और उन की आँखें उलट देंगे, जैसे वह उन (निशानियों) पर पहली बार ईमान नहीं लाए, और हम उन्हें छोड़ देंगे उन की सरकशी में कि वह बहकते रहें। (110)

ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ فَاعْبُدُوْهُ ۚ

सो तुम उस की इबादत करो	हर चीज़	पैदा करने वाला	उस के सिवा	नहीं कोई माबूद	तुम्हारा रब	यही अल्लाह

وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ وَّكِيْلٌ ١٠٢ لَا تُدْرِكُهُ الْاَبْصَارُ ۫ وَهُوَ يُدْرِكُ

पा सकता है	और वह	आँखें	नहीं पा सकतीं उस को	102	कारसाज़-निगहबान	हर चीज़	पर	और वह

الْاَبْصَارَ ۚ وَهُوَ اللَّطِيْفُ الْخَبِيْرُ ١٠٣ قَدْ جَآءَكُمْ بَصَآئِرُ مِنْ

से	निशानियां	आ चुकीं तुम्हारे पास	103	ख़बरदार	भेद जानने वाला	और वह	आँखें

رَّبِّكُمْ ۚ فَمَنْ اَبْصَرَ فَلِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ عَمِيَ فَعَلَيْهَا ؕ وَمَآ اَنَا عَلَيْكُمْ

तुम पर	मैं	और नहीं	तो उस की जान पर	अन्धा रहा	और जो	सो अपने वास्ते	देख लिया	सो जो-जिस	तुम्हारा रब

بِحَفِيْظٍ ١٠٤ وَكَذٰلِكَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ وَلِيَقُوْلُوْا دَرَسْتَ

तू ने पढ़ा है	और ताकि वह कहें	आयतें	हम फेर फेर कर बयान करते हैं	और उसी तरह	104	निगहबान

وَلِنُبَيِّنَهٗ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ١٠٥ اِتَّبِعْ مَآ اُوْحِيَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ ۚ

तुम्हारा रब	से	तुम्हारी तरफ़	जो वहि आए	तुम चलो	105	जानने वालों के लिए	और ताकि हम वाज़ेह कर दें

لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ وَاَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِيْنَ ١٠٦ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ

चाहता अल्लाह	और अगर	106	मुश्रिकीन	से	और मुँह फेर लो	उस के सिवा	नहीं कोई माबूद

مَآ اَشْرَكُوْا ؕ وَمَا جَعَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا ۚ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْهِمْ

उन पर	तुम	और नहीं	निगहबान	उन पर	बनाया तुम्हें	और नहीं	न शिर्क करते वह

بِوَكِيْلٍ ١٠٧ وَلَا تَسُبُّوا الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَيَسُبُّوا

पस वह बुरा कहेंगे	अल्लाह के सिवा	से	वह परस्तिश करते हैं	वह जिन्हें	और तुम न गाली दो	107	दारोग़ा

اللّٰهَ عَدْوًاۢ بِغَيْرِ عِلْمٍ ؕ كَذٰلِكَ زَيَّنَّا لِكُلِّ اُمَّةٍ عَمَلَهُمْ ۪ ثُمَّ

फिर	उन का अ़मल	फ़िर्क़ा	हम ने भला दिखाया हर एक	उसी तरह	बे समझे बूझे	गुस्ताख़ी से	अल्लाह

اِلٰى رَبِّهِمْ مَّرْجِعُهُمْ فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ١٠٨ وَاَقْسَمُوْا

और वह क़सम खाते थे	108	करते थे	जो वह	वह फिर उन को जता देगा	उन को लौटना	अपना रब	तरफ़

بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ لَئِنْ جَآءَتْهُمْ اٰيَةٌ لَّيُؤْمِنُنَّ بِهَا ؕ قُلْ

आप कह दें	उस पर	तो ज़रूर ईमान लाएंगे	कोई निशानी	उन के पास आए	अलबत्ता अगर	ताकीद से	अल्लाह की

اِنَّمَا الْاٰيٰتُ عِنْدَ اللّٰهِ وَمَا يُشْعِرُكُمْ ۙ اَنَّهَآ اِذَا جَآءَتْ

जब आएं	कि वह	ख़बर तुम्हें	और क्या	अल्लाह के पास	निशानियां	कि

لَا يُؤْمِنُوْنَ ١٠٩ وَنُقَلِّبُ اَفْـِٕدَتَهُمْ وَاَبْصَارَهُمْ كَمَا لَمْ يُؤْمِنُوْا

वह ईमान नहीं लाए	जैसे	और उन की आँखें	उन के दिल	और हम उलट देंगे	109	ईमान न लाएंगे

بِهٖٓ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّنَذَرُهُمْ فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ١١٠ ع ١٣ ١٩

110	वह बहकते रहें	उन की सरकशी	में	और हम छोड़ देंगे उन्हें	पहली बार	उस पर